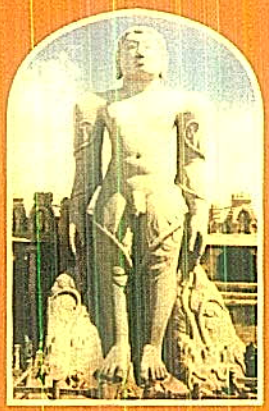

जैन तीर्थवंदना

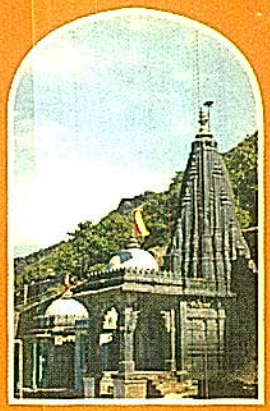

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : IV ISSUE : 8 MUMBAI, FEBRUARY 2014 PAGES : 32 PRICE : ₹25

श्री १००८ अजितनाथ भगवान, मथुरा-चौरासी क्षेत्र

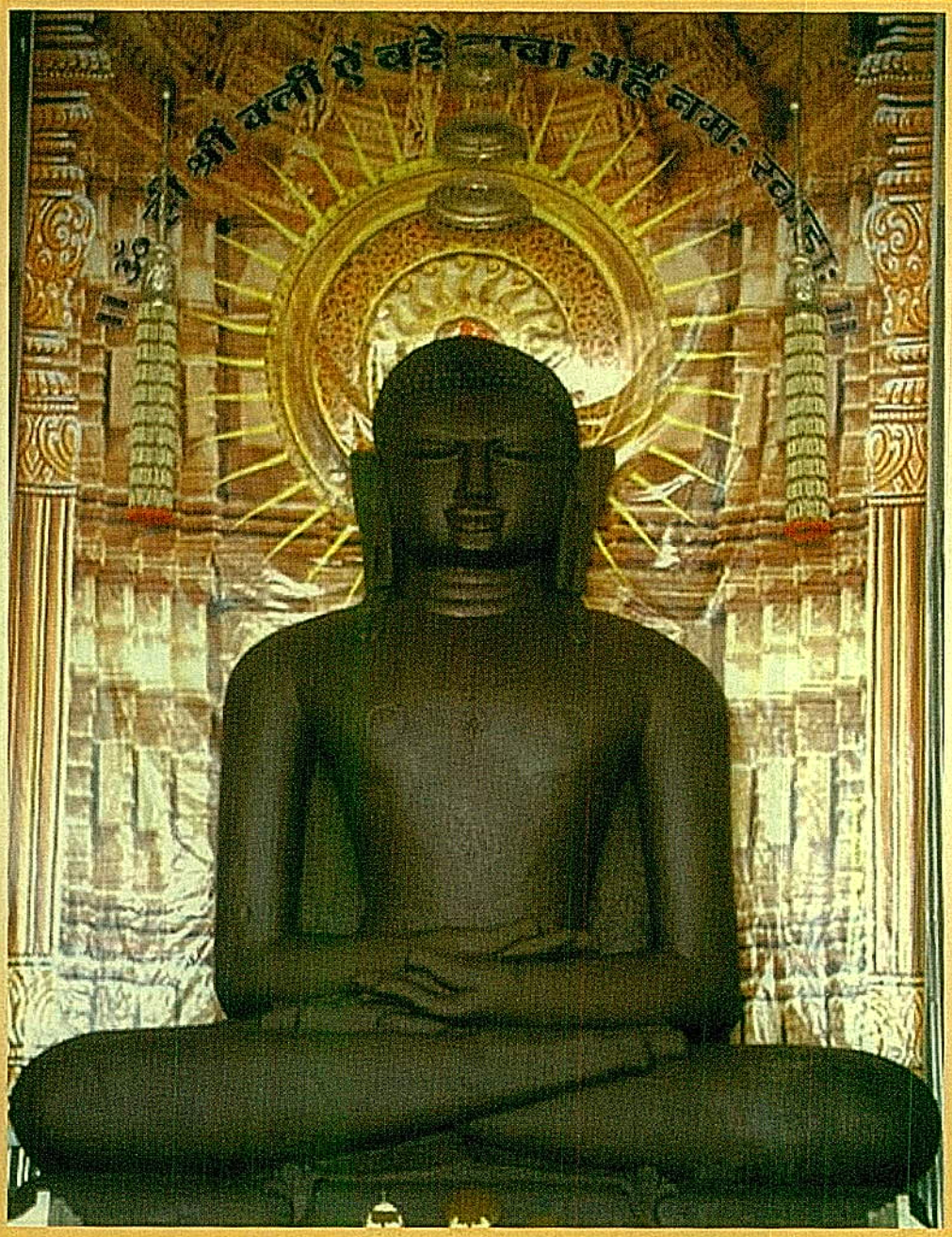

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्षीय भावना

प्रिय भाइयों एवं बहिनों,

सादर जय जिनेन्द्र।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मेरे साथी पदाधिकारी, अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में, अपने कर्तव्य पालन, आप सभी धर्मप्रेमी बंधुओं के सहयोग से, करने हेतु, कदम बढ़ा रहे हैं।

श्री सम्मेदशिखरजी पर्वत पर, रास्ते का सुधार कार्य, डाक बंगले की मरम्मत, भाताघर की साफ-सफाई-रंग रोगन एवं मरम्मत तथा भगवान पार्श्वनाथ जी की टोंक पर, जिनालय के फर्श का कार्य, दरवाजे-खिड़कियों का नवीनीकरण एवं रेलिंग लगाने का कार्य, ठंडे मौसम की वजह से सही गति नहीं पकड़ पा रहा है।

डाक बंगले पर शुद्ध भोजन की व्यवस्था का शुभारम्भ किया जा चुका है। तीर्थ यात्रियों की सराहना के उद्‌गार हमारा उत्साह बढ़ा रहे हैं। एक से अधिक पूजा-वंदना करने वालों को बहुत सुविधा हो रही है। तीर्थयात्री गैरकानूनी ढंग से चल रही पर्वत पर दुकानों से अशुद्ध पदार्थों के सेवन से बच रहे हैं।

यात्रा पथ के किनारे घाटियों में, महीनों से जमा गंदगी, पालीथीन की पन्नियां-पाउच-रेपर्स की सफाई का क्रम नियमित रूप से जारी है। मधुबन स्थित तीर्थक्षेत्र कमेटी कार्यालय के प्रबंधन एवं सहयोगी, नियमित देखरेख द्वारा सफाई-व्यवस्था से सभी यात्रियों की सराहना प्राप्त कर रहे हैं।

नवीन पदाधिकारी परिषद के गठन के डेढ़ माह के अंदर ही हम, उत्तर प्रदेश, बंगाल-बिहार, झारखण्ड, गुजरात, कर्नाटक एवं मध्यप्रदेश के अनेक तीर्थक्षेत्रों तथा समीप के नगरों की यात्रा कर, क्षेत्रों की आवश्यकता एवं सुरक्षा की आवश्यक जानकारी एकत्रित करने हेतु प्रयत्नशील हैं। सुरक्षा एवं संवर्धन हेतु पूरे देश के सभी क्षेत्रों के पदाधिकारियों को सीसीटीवी कैमरे, सर्वेक्षण-प्रपत्र भरने हेतु निवेदन पत्र प्रेषित किए हैं, ताकि शीघ्रातिशीघ्र उपकरण लगाये जा सकें।

कर्नाटक यात्रा में बेंगलुरु - श्री श्रवणबेलगोला, श्री मूडबिद्री, हासन, धर्मस्थल - के तीर्थों, मंदिरों के दर्शन तथा श्रवणबेलगोला में भगवान बाहुबली के चरणों में अभिषेक-पूजन का आनंद जीवन को नई अनुभूति से आल्हादित कर गया। परम आदरणीय स्वामी चारुकीर्तिजी महापंडिताचार्य भट्टारक जी के मार्गदर्शन में, पूरे श्रवणबेलगोला में मिले आत्मीय स्वागत, सम्मान एवं वात्सल्य ने हम सभी को **कर्नाटक का चिर ऋणी बना दिया- जीवन पर्यंत के लिए।**

हम श्वेताम्बर भाइयों, प्रमुखों के साथ बैठकों के माध्यम से समन्वय का मार्ग खोजने के लिए कटिबद्ध है। विश्वासपूर्ण, सौहार्द्रपूर्ण वातावरण हमें मिलजुल कर, कानूनी चंगुल से छुटकारा दिला सकेगा- ऐसा विश्वास है।

रोशनी क्यों न आयेगी हमारे आंगन में,
हम अंधेरों को निगल जायेंगे।

श्री केशरियाजी, श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ एवं श्री गिरनारजी की जटिल समस्याओं के समाधानों के बीच नई रोशनी की किरणें दिखने लगी है। हम सभी तन-मन-धन से आचार्य भगवंतों के आशीर्वाद से, हल निकालने के लिए, कोई कोर-कसर बाकी नहीं छोड़ेंगे। सभी का आत्मीय सहयोग एवं गुरुजनों की दूरदृष्टि हमारा मार्ग प्रशस्त कर रही है। जैन जगत के प्रमुख श्रेष्ठीगण हमारा मार्गदर्शन कर, हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं।

कुछ कर गुज़रने के लिए,
मौसम नहीं मन चाहिये।
दूरियां कितनी भी हों, केवल
समर्पण चाहिये।।

अहो! पिछले माह ही हमें सपरिवार, **भगवान् अभिनंदननाथ जी** के नवीन चरण, विधि-विधान पूर्वक, शिखरजी-टोंक पर स्थापित करने का परम-परम पुण्य-सौभाग्य मिला।

श्री मूडबिद्री जी से चोरी गई बेशकीमती-रत्न प्रतिमाएं, देश के चहुंओर से बने दबाव के फलस्वरूप, वापस मिलने का समाचार जैन जगत को खुशियों से भर गया।

27 जनवरी 2014 को जैनों को 'राष्ट्रीय अल्पसंख्यक' की घोषणा-जैन धर्म के मूल सिद्धांतों-आमनाओं की मौलिकता की विजय पताका का शंखनाद सा है।

हमारी पुरजोर कोशिश है कि हम सभी जैन बंधु दिगम्बर-श्वेताम्बर मिलकर पूरे देश में (1) कत्लखानों के विरोध में (2) मांस-निर्यात के विरोध में (3) शराब-नशा के विरोध में तथा शाकाहार के समर्थन में- राष्ट्रव्यापी-चेतना-अभिमानों द्वारा केन्द्रीय शासन एवं राज्य सरकारों को उचित कार्यवाही करने हेतु बाध्य करें। हमारे तीर्थों, को 'मांस-मदिरा' मुक्त क्षेत्र घोषित करें।

राजनैतिक-क्षमतावान-योग्य जैन प्रत्याशियों को समर्थन देकर, संसद एवं राज्यसभा, विधान सभाओं में, चुनकर पहुंचने हेतु, सभी सहयोग देवें। **प्रजातंत्र में राजनैतिक बल-सामर्थ्य का होना अब नितांत आवश्यक होता जा रहा है।** सम्मान पूर्वक जीवन-यापन के लिए, धार्मिक संस्कारों की रक्षा के लिए, सभी जैनों का एकजुट होकर-सामाजिक-राजनैतिक रूप से सजग होना अब अनिवार्य लगने लगा है।

दयाधर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छांड़िये, जब तक घट में प्राण।।

''अहिंसामयी धर्म की जय हो ..... जय हो ..... जय हो''

जय - जय गुरुदेव .....

जय जिनेन्द्र .....

आपका विनम्र साथी,

सुधीर जैन

अहिंसा से सात्विक भाव उत्पन्न होते हैं।

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 4 अंक 8 फरवरी 2014

परामर्श मण्डल

डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर
डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी,
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-2385937

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

तीर्थंकर भगवान् श्री 1008 अजितनाथ	5
डाक बंगले पर शुद्ध भोजन व्यवस्था	7
जैन समुदाय को राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यक का दर्जा मिला	9
अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए प्रधानमंत्री के नए 15-सूत्री कार्यक्रम	11
THE LIKELY IMPACT OF INCLUSION OF JAINS AS NATIONAL RELIGIOUS MINORITIES	13
Prime Minister's New 15 Point Programme	1[illegible]
पारसनाथ स्टेशन तक नई रेलवे लाइन बढ़ाये जाने की मांग	16
हिन्दी समर्थ है, समृद्ध है - इसे हृदय में बसाना है	19
धर्म एक वृक्ष है कोई पत्थर तो नहीं	19
हमारे नये बने सदस्य	25

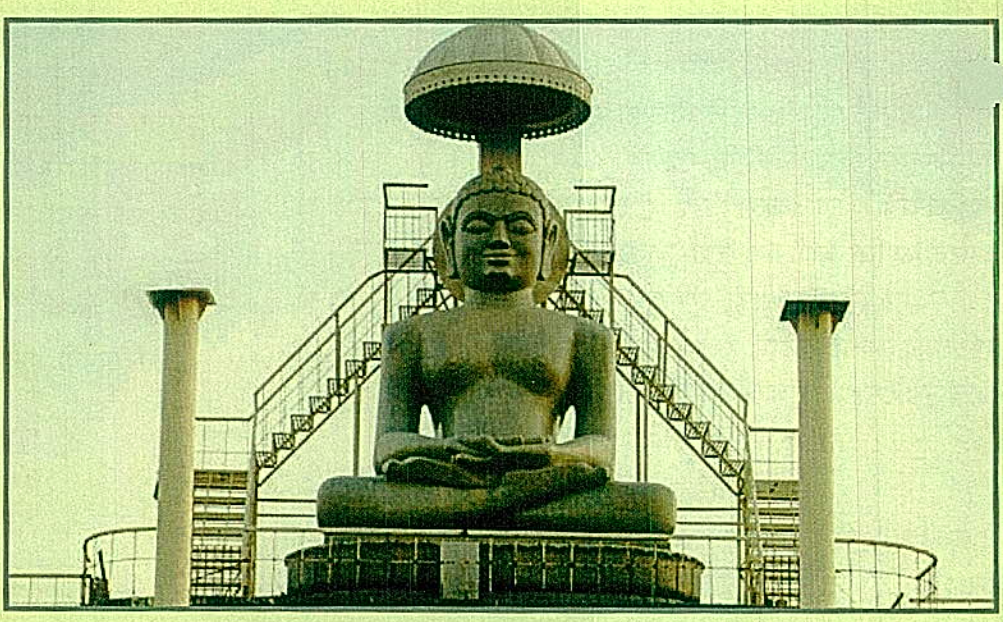

तीर्थंकर भगवान् श्री 1008 अजितनाथ, मथुरा चौरासी

तीर्थंकर भगवान् श्री 1008 अजितनाथ

—कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन
महामंत्री—श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्
एल ६५, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर (म.प्र.)

जैनधर्म की वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों की परम्परा में कर्मयुग के प्रतिष्ठापक प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव के उपरान्त द्वितीय तीर्थंकर के रूप में तीनलोक के कल्याण की भावना लिए हुए श्री अजितनाथ जी का जन्म हुआ। वे जन्म से ही मति, श्रुत और अवधिज्ञान के स्वामी थे। आचार्य श्री गुणभद्र स्वामी ने 'उत्तरपुराण' में उन्हें इस रूप में नमन किया है—

श्रीमान् जिनोऽजितो जीयाद् यद्वचांस्यमलान्यलम् ।
क्षालयन्ति जलानीव विनेयानां मनोमलम् ।।

अर्थात् अनन्त चतुष्टय रूप अन्तरंग लक्ष्मी और अष्ट प्रातिहार्य रूप बहिरंग लक्ष्मी से युक्त वे अजितनाथ स्वामी सदा जयवन्त रहें; जिनके कि निर्दोष—पूर्वापर विरोध आदि दोषों से रहित वचन जल की तरह भव्य जीवों के मन में स्थित रागद्वेषादिरूप मल को धो डालते हैं।

तीर्थंकर श्री अजितनाथ स्वामी का जीवनवृत्त इस प्रकार है—

जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह क्षेत्र में सीता नदी के दक्षिण तट पर वत्स नामक देश में सुसीमा नामक नगर में राजा विमलवाहन उत्साहशक्ति, मंत्रशक्ति, फलशक्ति रूप तीन शक्तियों तथा उत्साह सिद्धि, मंत्रसिद्धि और फलसिद्धि; इन तीन सिद्धियों से युक्त जैनधर्माचरण के प्रति संकल्पबद्ध होकर राज्य करते थे। कालान्तर में जिनदीक्षा ग्रहण कर जब उन्होंने समाधिमरणपूर्वक देह त्यागी तो विजय नामक अनुत्तर विमान में जन्म लिया। वही देव अपनी आयु भोगकर तीर्थंकर नामक पुण्यप्रकृति के प्रभाव से जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के अयोध्यानगर में इक्ष्वाकुवंशीय काश्यपगोत्री राजा जितुशत्रु की रानी विजयसेना के गर्भ में ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या के दिन आए और माता को सुख देते हुए माघ शुक्ल दसमी को जन्म लिया। जन्माभिषेक के उपरान्त सौधर्म इन्द्र ने उस तीर्थंकर बालक का नाम श्री अजितनाथ रखा और नमन किया। उनका चिन्ह गज (हाथी) घोषित किया गया।

तीर्थंकर श्री अजितनाथ भगवान, बंधाजी क्षेत्र

तीर्थंकर श्री अजितनाथ की आयु बहत्तर लाख पूर्व की थी। उनकी ऊँचाई ४५० धनुष की थी। उनका रंग सुवर्ण के समान पीला था।

अपने ही कर्म, अपने जीवन का दर्पण है।

उन्होंने प्रजा का पालन करते हुए १ लाख पूर्व कम अपनी आयु के तीन भाग तथा एक पूर्वांग तक राज्यभोग किया।

एक दिन आकाश में उल्का देखकर वे विषय, शरीर तथा राज्य भोग से विरक्त हो गये। लोकान्तिक देवों ने ब्रह्मस्वर्ग से आकर उनके वैराग्यमय विचारों की अनुमोदना की और उनके विचार को अनुकरणीय बताया। इस स्थिति को आचार्य श्री गुणभद्र स्वामी ने इस रूप में कहा है–

तेषां तदुदितं तस्य लोकस्येवांशुमालिनः।
स चक्षुषो यथार्थावलोकेऽगात्सहकारिताम् ।।

अर्थात् जिस प्रकार लोग देखते तो अपने नेत्रों से हैं परन्तु सूर्य उसमें सहायक हो जाता है, उसी प्रकार भगवान् यद्यपि स्वयंबुद्ध थे तो भी लोकान्तिक देवों का कहना उनके यथार्थ अवलोकन में सहायक हो गया।

तीर्थंकर श्री अजितनाथ ने अपने पुत्र श्री अजितसेन के लिए राज्य देकर सुप्रभा नामक पालकी में बैठकर सहेतुक वन में जाकर माघ शुक्ल नवमी के दिन पंचमुष्टि केशलोंचकर दिगम्बर जिनदीक्षा ले ली। उनके साथ एक हजार आज्ञाकारी राजाओं ने भी जिनदीक्षा ली। उनका साकेतनगरी के ब्रह्मा नामक राजा के यहाँ प्रथम आहार हुआ।

बारह हजार वर्ष की तपस्या के उपरान्त पौष शुक्ल एकादशी के दिन उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ। समवशरण की द्वादश सभा में उनके सिंहसेन आदि ९० गणधर थे। ३,७५० पूर्वधारी, २१,६०० शिक्षक, ९,४०० अवधिज्ञानी, २०,००० केवलज्ञानी, २०,४०० विक्रिया ऋद्धि वाले, १२,४५० मनःपर्ययज्ञानी, १२,४०० अनुत्तरवादी थे। इस तरह कुल एक लाख तपस्वी थे। प्रकुब्जा नामक प्रमुख आर्यिका सहित ३,२०,००० आर्यिकाएं, ३,००,००० श्रावक, ५,००,००० श्राविकाएं और असंख्यात देव–देवियां थीं। श्री अजितनाथ तीर्थंकर के काल में ही महाप्रतापी श्री सगर चक्रवर्ती हुए जिनके ६० हजार पुत्रों ने कैलासपर्वत के चारों ओर परिखा बनायी। कालान्तर में जिन दीक्षा ली और मोक्ष प्राप्त किया।

तीर्थंकर श्री अजितनाथ की महिमा के विषय में आचार्य श्री गुणभद्र ने लिखा है कि–

पापैः क्वापि न जीयतेऽयमिति वा दुर्वादिभिश्चाखिलै–
र्नामान्वर्थमवाप्तवानिति विदां स्तोत्रस्य पात्रं भवन्।
आर्यक्षेत्रमशेषमेष विहरन् सम्प्राप्य सम्मेदकं
स्थित्वा दिव्यनिनादयोगरहितस्तत्रैव पक्षद्वयम्।।५१।।
कुर्वाणः समयं प्रति प्रकृतिषु स्रावं गुणासङ्ख्यया
स्थित्यादिं च विघातयन् स्वमितिकं दण्डादिकं वर्तयन् ।
सूक्ष्मध्याननिरुद्धयोगविभवो विश्लिष्टदेहत्रय–
स्तुर्यध्यानसमाश्रयात्समुपयंश्चाष्टौ गुणान् शुद्धिभाक् ।।५२।।

आर्या

चैत्रज्योत्स्नापक्षे पंचम्यां रोहिणीगते चन्द्रे।
प्रतिमायोगं बिभूत्पूर्वाह्णेऽवाप मुक्तिपदम्।।५३।।

अर्थात् यह न तो कहीं पापों से जीते जाते हैं और न समस्त वादी ही इन्हें जीत सकते हैं इसलिए 'अजित' इस सार्थक नामको प्राप्त हुए हैं, इस प्रकार विद्वानों की स्तुति के पात्र होते हुए भगवान् अजितनाथ ने समस्त आर्यक्षेत्र में विहार किया और अन्त में सम्मेदाचल पर पहुँचकर दिव्यध्वनि से रहित हो एक मास तक वहीं पर स्थिर निवास किया। उस समय उन्होंने प्रतिसमय कर्म प्रकृतियों की असंख्यातगुणी निर्जरा की, उनकी स्थिति आदि का विधान किया, दण्डप्रतर आदि लोकपूरणसमुद्घात किया, सूक्ष्मक्रिया–प्रतिपाती ध्यान के द्वारा योगों का वैभव नष्ट कि. .., औदारिक, तैजस और कार्मण इन तीन शरीरों के सम्बन्ध को पृथक् किया, और सातिशय विशुद्धता को प्राप्त हो व्युपरतक्रियानिवर्ती नामक चतुर्थ शुक्ल ध्यान के आश्रय से अनन्तज्ञानादि आठ गुणों को प्राप्त किया। इस प्रकार चैत्र शुक्ल पंचमी के दिन जब कि चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र पर था, प्रातः काल प्रतिमायोग धारण करने वाले भगवान् अजितनाथ ने मुक्तिपद प्राप्त किया।

इस तरह द्वितीय तीर्थंकर श्री अजितनाथ ने तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की धर्म–धारा को आगे बढ़ाया। उन्होंने सिद्ध किया कि जो सोलह कारण भावनाओं का चिन्तन करते हुए तीन लोक के जीवों की कल्याण कामना करता है वही तीर्थंकर पद को प्राप्त होता है। यह जीव भले ही स्वर्ग के सुख चाहे, मिलें तो भोग भी ले; किन्तु उनकी नश्वरता का परिज्ञान होते ही वह जिनेश्वर के मार्ग का अनुसरण करता है और मोक्ष प्राप्त करता है।

आचार्य श्री समन्तभद्र स्वामी ने वृहत्स्वयंभू स्तोत्र अजितनाथ तीर्थंकर के नाम को पृथ्वी पर अजेय शक्ति का धारक होने के कारण सार्थक मानकर उन्हें मंगलस्वरूप कहा है। वे लिखते हैं–

अद्यापि यस्याजितशासनस्य, सतां प्रेरुः प्रतिमंगलार्थम्।
प्रगृह्यते नाम परं पवित्रं, स्वसिद्धिकामेन जनेन लोके।।

अर्थात् परवादियों के द्वारा अविजित अनेकान्त मत से युक्त तथा सत्पुरुषों के प्रधान नायक जिन अजितनाथ भगवान् का अत्यन्त पवित्र नाम आज भी अपने मनोरथों की सिद्धि के इच्छुक जनसमूह के द्वारा प्रत्येक मंगल के लिए सादर ग्रहण किया जाता है।

तीर्थंकर श्री अजितनाथ स्वामी तीर्थंकरों के क्रम में भी द्वितीय थे, श्रुत के ज्ञान में भी अद्वितीय थे। हम भी उनके बताए धर्म मार्ग का अनुसरण करें और अद्वितीय बनें।

विश्व में सबसे अधिक शक्ति आत्मा के पास है।

श्री सम्मेदशिखरजी

डाक बंगले पर शुद्ध भोजन व्यवस्था

- श्री सम्मेदशिखरजी पर्वत से वंदना कर लौट रहे यात्रियों के लिए डाक बंगले पर शुद्ध भोजन की व्यवस्था प्रारम्भ
- 10 रुपये का कूपन एक दिन पहले तलहटी स्थित तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्यालय से लेना आवश्यक होगा
- इस ऐतिहासिक कार्य का शुभारम्भ तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री एवं पारस चैनल के चेयरमैन श्री पंकज जैन और आर.के.मार्बल्स के निदेशक श्री अशोक जैन पाटनी के कर-कमलों से हुआ

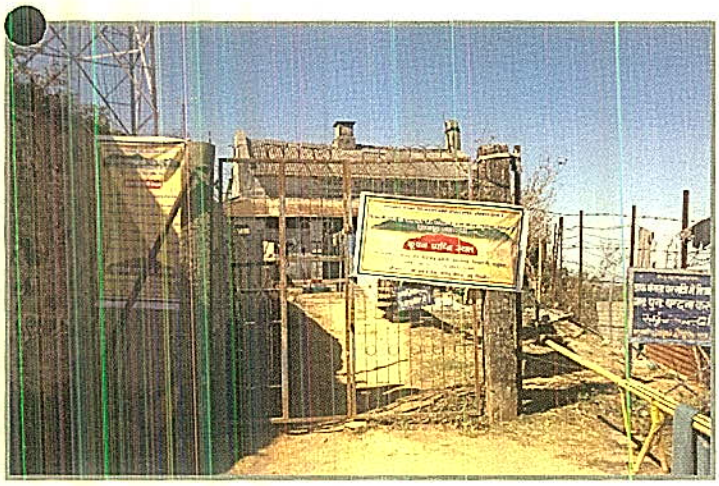

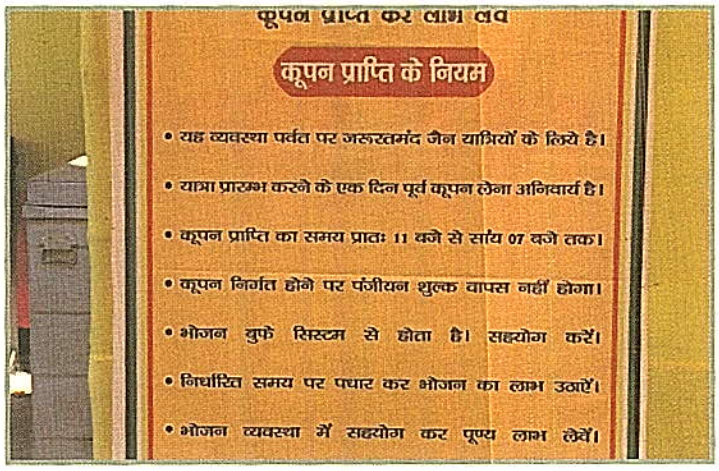

आचार्यों ने शास्त्रों में बार-बार कहा है कि अनंतानुबंद्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, कषाय मत करो। इससे हमारे शरीर के अंदर शांति रस के परमाणु जल जाते हैं, इसलिये आचार्यों ने श्रावकों के लिये धर्म ध्यान के लिये मन, वचन, काय को शुद्ध रखने के लिये कहा है। जितने भी यात्री तीर्थ वंदना के लिये आते हैं, वह सब धर्म ध्यान के लिये ही आते हैं। जहां वह अपनी विशुद्धि करने के लिये वंदना करते हैं, उसी को आगे बढ़ाते हुए समाज के श्रेष्ठीजनों ने यह सोचा कि वंदना के बाद उन्हें शुद्ध भोजन की व्यवस्था मिल जाए तो थके यात्रियों को आत्मचिंतन और धर्म ध्यान में वृद्धि हो सकती है। बड़ी प्रसन्नता और गौरव की बात है कि श्री सम्मेदशिखर जी में भगवान पार्श्वनाथ की टोंक से लगभग एक किलोमीटर चलकर डाक बंगले पर पारस चैनल के चेयरमैन एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री के उद्यम से शुद्ध भोजन व्यवस्था की योजना बनाई गई और 24 जनवरी, 2014 मध्याह्न 1 बजे डक बंगले पर श्री अशोक जैन पाटनी (आर.के.मार्बल्स) के कर-कमलों से मुहूर्त रूप दिया। इस अवसर पर श्री अशोक पाटनी ने कहा कि खाने की क्वालिटी शुद्ध रखना। वर्तमान में यहां भोजन व्यवस्था श्री पंकज जैन (पारस चैनल), राजेश जैन, प्रवीन जैन, अशोक जैन पाटनी- चारों श्रेष्ठियों ने मिलकर शुरुआत की है। उद्घाटन अवसर पर डॉ. सोगाणी (अपोलो अस्पताल), श्री किशोर जैन (उपाध्यक्ष, शाश्वत ट्रस्ट), श्री छीतरमल पाटनी (महामंत्री, शाश्वत ट्रस्ट), अक्षत जैन (विन्ध्या बिल्डर्स), प्रवीन कुमार जैन (सान्ध्य महालक्ष्मी), श्रीमती सुशीला जैन पाटनी (धर्मपत्नी अशोक पाटनी), श्रीमती वैशाली जैन (धर्मपत्नी पंकज जैन) समेत पर्वत वंदना कर लौट रहे सैकड़ों तीर्थयात्री मौजूद थे। साथ ही डाक बंगले के जीर्णोद्धार का कार्य पारस चैनल की ओर से श्री प्रवीन जैन करा रहे हैं।

मंगलाचरण श्रीमती सुशीला जैन पाटनी, श्रीमती वैशाली जैन एवं श्रीमती सोगाणी जैन ने किया। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के स्थानीय प्रबंधक श्री सुमन कुमार सिन्हा ने बताया कि इस भोजनशाला की देखरेख हमारे यहां के श्री देवेन्द्र जैन और श्री पाठक करेंगे। उन्होंने बताया कि सबसे पहले यहां की भोजन व्यवस्था सन् 1996 में श्री श्रीकिशोर जैन के प्रयासों से शुरू हुई थी। आज बड़ी प्रसन्नता की लहर समाज में फैली कि पर्वत वंदना कर लौट रहे यात्रियों को शुद्ध भोजन डाक बंगले पर प्राप्त होगा। इसके लिये यात्रियों को 10 रुपये का कूपन तलहटी स्थित तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्यालय से प्राप्त करना आवश्यक होगा।

जिस व्यक्ति के जीवन में कर्तव्य की पहचान है वही धर्म को पहचान पाता है।

भोजनशाला की झलकियां

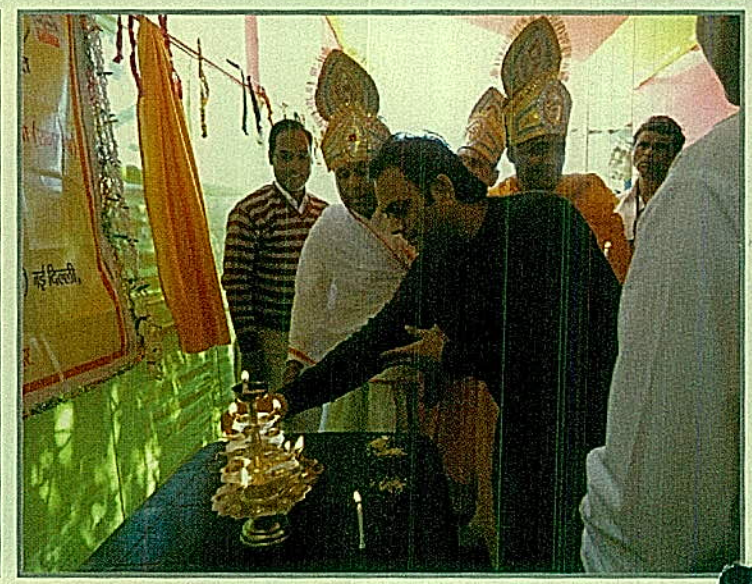

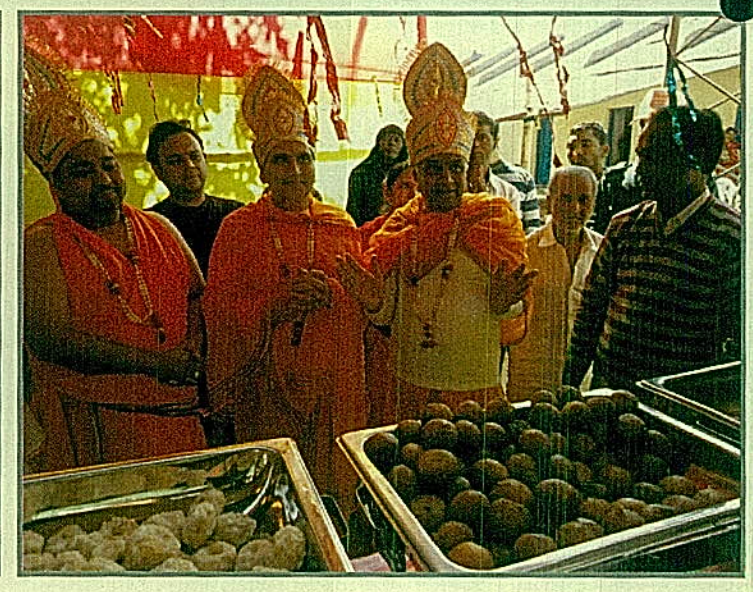

असंतोषी से बड़ा कोई गरीब नहीं, संतोषी से बढ़कर कोई धनवान नहीं।

काफी लम्बे समय के बाद

जैन समुदाय को राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यक का दर्जा मिला

- श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि काफी लम्बे समय के बाद जैन समुदाय को राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यक का दर्जा केन्द्र सरकार ने दिया है। भारतीय संविधान में नागरिकों के मूलभूत अधिकार अध्याय के अंतर्गत सांस्कृतिक और शैक्षणिक अधिकारों में अनुच्छेद 29 में अल्पसंख्यकों के अधिकारों की सुरक्षा, संरक्षण, संवर्धन, विकास करने तथा उनका उल्लंघन अतिक्रमण होने पर शिकायतों का निवारण करने के लिए नेशनल कमीशन फार माइनोरिटीज एक्ट 1992 को संसद में पारित किया गया है। इस एक्ट की धारा 2 (सी) के अंतर्गत जैन समुदाय को राष्ट्रीय स्तर पर ऐसा छठा अल्पसंख्यक समुदाय अधिसूचित किया गया है। नव वर्ष में केन्द्रीय सरकार द्वारा यह तोहफा जैन समाज को दिया गया है। उल्लेखनीय है कि यूँ तो 14 राज्यों में जैनों को पहले से ही अल्पसंख्यक घोषित किया गया है जिनमें आंध्र प्रदेश, उत्तराखण्ड एवं प. बंगाल सम्मिलित है, परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यक की मान्यता मिले, यह मांग पिछले कई वर्षों से की जा रही थी।

राष्ट्रीय स्तर पर जैन समुदाय को अल्पसंख्यक का दर्जा घोषित कराने में समग्र जैन समाज का, विशेषकर स्व. श्री बाल पाटिल, मुंबई, जिन्होंने इस आंदोलन को शिखर तक पहुंचाने में अथक प्रयास किया, साथ ही साथ लोकसभा के सभी सदस्यों एवं केन्द्रीय अल्पसंख्यक मंत्री श्री के.के.रहमान खानजी का योगदान रहा, जिन्होंने कानूनी स्थिति पर समीक्षात्मक स्पष्टीकरण देते हुए जैन समुदाय को राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यक की मान्यता देने की संस्तुति करवाई। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, जिसने पूर्व चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया जस्टिस बी.एन.खरे, पूर्व चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया जस्टिस श्री एम.एन.कनिया व पूर्व चीफ जस्टिस दिल्ली होई कोर्ट जस्टिस अजीत प्रकाश शाह की लीगल ओपीनियन लेकर केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' के नेतृत्व में चारों जैन संप्रदाय का एक प्रतिनिधिमंडल प्रथम बार भारत सरकार के प्रधानमंत्री को मिलकर उन्हें ज्ञापन देकर यह निवेदन किया कि जैन धर्म स्वतंत्र धर्म है और भारत के संविधान की धारा 29 एवं 30 के अनुसार उसे अल्पसंख्यक का दर्जा दिया जाना चाहिए, जिसे प्रधानमंत्री ने अपनी टिप्पणी के साथ अल्पसंख्यक मंत्रालय को भिजवाया। तत्कालीन केन्द्रीय अल्पसंख्यक मंत्री श्री सलमान खुर्शीद ने अपने नोट के साथ एटार्नी जनरल को कानून मंत्रालय की ब्रीफ नोट बनाकर भिजवाने हेतु दिया, जिस पर एटॉर्नी जनरल जी.ई.वाहनवती ने जैन समुदाय को अल्पसंख्यक मान्यता देने के लिए केन्द्रीय सरकार को संवैधानिक दृष्टि से एवं नेशनल कमीशन फार माइनोरिटी एक्ट 92 की धारा (सी) के अंतर्गत अधिकार सक्षम मानते हुए लीगल ओपीनियन दी, जिसके आधार पर अल्पसंख्यक मंत्रालय ने यह विषय केबिनेट की दिनांक 20 जनवरी, 2014 की मीटिंग में प्रस्तुत किया। अतएव दिनांक 20 जनवरी, 2014 को जैसे ही यह बिल केबिनेट में रखा गया वैसे ही सर्वानुमति से स्वीकृत कर दिया गया, जिससे जैन समाज में हर्ष की लहर फैल गई है। उसके बाद 27 जनवरी, 2014 को भारत सरकार के सचिव ललित के. पंवार की हस्ताक्षरित अधिसूचना जारी की गई, जिसमें जैन समुदाय को अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में अधिसूचित किया गया।

केन्द्रीय स्तर पर जैन समाज को अल्पसंख्यक का दर्जा दिलाने में प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह, यूपीए अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी, उपाध्यक्ष श्री राहुल गांधी, कानून मंत्री श्री कपिल सिब्बल एवं केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' तथा केबिनेट के सभी मिनिस्टरों ने जो अहम भूमिका निभाई है उसके लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री पंकज जैन (पारस चैनल) भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार एवं संपूर्ण जैन समाज हृदय की गहराईयों से आभार व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता है।

जैन समुदाय अल्पसंख्यक बनने पर निम्नलिखित लाभों को प्राप्त कर सकता है :-

1. जैनधर्म की सुरक्षा होगी।
2. कम ब्याज पर लोन व्यवसाय व शिक्षा तकनीकी हेतु उपलब्ध होंगे।
3. जैनधर्म की नैतिक शिक्षा पढ़ाई कराने का जैन स्कूलों को अधिकार।
4. जैन कॉलेजों में जैन के लिए 50 प्रतिशत आरक्षित सीटें होंगी।
5. जैन धर्मावलंबियों के धार्मिक स्थल, संस्थाओं, मंदिरों, तीर्थक्षेत्रों एवं ट्रस्ट का सरकारीकरण या अधिग्रहण आदि नहीं किया जा सकेगा, अपितु धार्मिक स्थलों का समुचित विकास एवं सुरक्षा के व्यापक प्रबंध शासन द्वारा भी किए जायेंगे।
6. जैन समुदाय के अल्पसंख्यक घोषित हो जाने से संविधान के अनुच्छेद 25 से 30 के अनुसार जैन समुदाय धर्म, भाषा, संस्कृति की रक्षा संविधान में उपलब्धों के अंतर्गत हो सकेगी।
7. उपासना स्थल अधिनियम 1991 (42 आक-18-9-91) के तहत किसी धार्मिक उपासना स्थल को बनाए रखने हेतु स्पष्ट निर्देश, जिसका उल्लंघन धारा 6(3) के अधीन दंडनीय अपराध है। पुराने स्थलों एवं पुरातन धरोहर को सुरक्षित रखना। सन् 1958 के अधिनियम धारा 19 व 20 के तहत सुरक्षित हो।
8. जैन धर्मावलम्बी अपनी प्राचीन संस्कृति पुरातत्व एवं धर्मस्थलों का संरक्षण कर सकेंगे।
9. समुदाय द्वारा संचालित ट्रस्टों की सम्पत्ति को किराया नियंत्रण से भी मुक्त रखा जायेगा।
10. जो प्रतिभावान अल्पसंख्यक विद्यार्थी जिले के उत्कृष्ट विद्यालयों में प्रवेश पाते है, उनमें गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले विद्यार्थियों का 9वीं, 10वीं, 12वीं कक्षा का शिक्षण शुल्क एवं अन्य

'जिनवाणी' मनोरंजन का नहीं, आत्मरंजन का साधन है।

FROM :SECTARYMAJ FAX NO. :01124364285 27 Jan. 2014 03:27 P 1

TO BE PUBLISHED IN THE GAZETTE OF INDIA EXTRAORDINARY
IN PART II SECTION 3 SUB-SECTION(ii)

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF MINORITY AFFAIRS

Dated 27th January, 2014

NOTIFICATION

S.O. NO. ____ ( ) In exercise of the powers conferred by clause(c) of Section 2 of the National Commission for Minorities Act, 1992(19 of 1992), the Central Government hereby notifies the Jain community as a minority community in addition to the five communities already notified as minority communities viz. Muslims, Christians, Sikhs, Buddhists and Zoroastrians(Parsis) vide Ministry of Welfare Notification SO No. 816(E) dated 23.10.1993 for the purposes of the said Act.

(Lalit K. Panwar)
Secretary to the Govt. of India 27.1.14

F. No. 1-1/2009-NCM

The Manager
Government of India Press,
Maya Puri
New Delhi

लिया जाने वाला शुल्क पूर्णतः माफ कर दिया जायेगा।

11. जैन मंदिरों तीर्थ स्थलों, शैक्षणिक संस्थाओं इत्यादि के प्रबंध की जिम्मेदारी समुदाय के हाथ में दी जायेगी।

12. अल्पसंख्यक समुदाय के धार्मिक स्थल के समुचित विकास एवं सुरक्षा के व्यापक प्रबंध शासन द्वारा किये जायेंगे।

13. शैक्षणिक एवं अन्य संस्थाओं को स्थापित करने या उनके संचालन में सरकारी हस्तक्षेप कम हो जायेगा।

14. जैन धर्मावलम्बी द्वारा पुण्यार्थ, प्राणीसेवा, शिक्षा इत्यादि हेतु दान धन कर मुक्त होगा।

15. विश्वविद्यालय द्वारा संचालित कोचिंग कॉलेजों में समुदाय के विद्यार्थियों को फीस माफ या कम होने की सुविधा प्राप्त होगी।

16. जैन धर्मावलम्बी को बहुसंख्यक समुदाय के द्वारा प्रताड़ित किये जाने की स्थिति में सरकार जैन धर्मावलंबी की रक्षा करेगी।

17. सरकार द्वारा जैन समुदाय को स्कूल, कॉलेज, छात्रावास, शोध या प्रशिक्षण संस्थान खोलने हेतु सभी सुविधाएं एवं रियायती दर पर जमीन उपलब्ध करवाई जायेगी।

18. जैन समुदाय द्वारा संचालित जिन संस्थाओं पर कानून की आड़ में बहुसंख्यकों ने कब्जा जमा रखा है, उनसे मुक्ति मिलेगी।

19. जैन समुदाय के विद्यार्थियों को प्रशासनिक सेवाओं और व्यावसायिक पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण हेतु अनुदान मिल सकेगा।

20. अल्पसंख्यक वर्ग के युवाओं में खेलकूद व अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रोत्साहन हेतु अनुदान एवं छात्रवृत्तियों में विशेष प्रावधानों का लाभ मिल सकेगा, ताकि गरीबी रेखा से नीचे आने वाले तथा आर्थिक स्थिति में कमजोर वर्ग का शैक्षणिक सामाजिक एवं आर्थिक विकास हो सकेगा।

21. अल्पसंख्यक समुदाय के लिए कराए गए आर्थिक सामाजिक, शैक्षणिक स्थिति के सर्वेक्षण के आधार पर रोजगारमूलक सुविधा का लाभ मिलेगा।

अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए प्रधानमंत्री के नए 15-सूत्री कार्यक्रम

माननीय राष्ट्रपति ने 25 फरवरी, 2005 को संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए घोषणा की थी कि सरकार कार्यक्रम विशिष्ट बातों को ध्यान में रखते हुए अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए नए सिरे से 15 सूत्री कार्यक्रम तैयार करेगी। स्वतंत्रता दिवस 2005 के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के नाम अपने संदेश में अन्य बातों के साथ-साथ कहा कि 'हम अल्पसंख्यकों के लिए संशोधित एवं बेहतर 15 सूत्री कार्यक्रम तैयार करेंगे। नए 15 सूत्री कार्यक्रम के निश्चित लक्ष्यों को निर्धारित समय-सीमा में प्राप्त किया जाएगा।' इन्हीं वचनबद्धताओं के अनुपालन में पिछले कार्यक्रम को संशोधित करते हुए अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए प्रधानमंत्री का नया 15 सूत्री कार्यक्रम तैयार किया गया।

2. कार्यक्रम के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

क) शिक्षा अवसरों को बढ़ावा देना।

ख) मौजूदा और नई योजनाओं के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों तथा रोजगार में अल्पसंख्यकों के लिए समान हिस्सेदारी सुनिश्चित करना, स्वरोजगार के लिए ऋण सहायता में वृद्धि और राज्य तथा केन्द्र सरकार के पदों पर भर्ती करना।

ग) आधारभूत ढांचा विकास योजनाओं में अल्पसंख्यकों की उपयुक्त हिस्सेदारी सुनिश्चित करके उनके रहन-सहन के स्तर में सुधार लाना।

घ) सांप्रदायिकता तथा हिंसा पर नियंत्रण एवं रोकथाम।

3. नए कार्यक्रम का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ अल्पसंख्यक समुदाय के लाभ से वंचित लोगों तक पहुंचे। अल्पसंख्यक समुदाय के लाभ से वंचित लोगों को निश्चित रूप से विभिन्न सरकारी योजनाओं के लक्षित समूह में शामिल किया जाना चाहिए। अल्पसंख्यक समुदाय को इन योजनाओं का लाभ उचित रूप से पहुंचाने के उद्देश्य से नए कार्यक्रम में अल्पसंख्यक समुदायों की घनी जनसंख्या वाले क्षेत्रों में यथानुपात विकास परियोजनाओं की परिकल्पना की गई है। इसमें यह भी प्रावधान किया गया है कि जहां कहीं भी संभव हो विभिन्न स्कीमों के अंतर्गत व्यय राशि का 15 प्रतिशत अल्पसंख्यकों के लिए निर्धारित किया जाए।

4. कार्यक्रम में उपयुक्त उपायों के माध्यम से सांप्रदायिक शांति और सौहार्द बनाए रखने तथा सार्वजनिक क्षेत्र सहित सरकार में अल्पसंख्यकों के प्रति हमेशा सहानुभूति रखने के प्रयास के रूप में उन्हें उचित प्रतिनिधित्व देने पर बल दिया गया है। यह नए कार्यक्रम का महत्वपूर्ण पहलू है।

5. कार्यक्रम में अल्पसंख्यकों के लिए किसी भी योजना के मानदंडों, मानकों अथवा पात्रता शर्तों में किसी प्रकार के परिवर्तन अथवा इनमें किसी छूट की परिकल्पना नहीं की गई है। ये योजनाएं कार्यक्रम में शामिल मूल योजनाओं के रूप में ही रहेंगे।

6. 15-सूत्री कार्यक्रम में व्यक्त शब्द 'महत्वपूर्ण अल्पसंख्यक आबादी' उन जिलों/उप जिला इकाइयों में लागू होता है जहां जिस इकाई की कुल आबादी की न्यूनतम 25 प्रतिशत आबादी अल्पसंख्यक समुदायों से सम्बद्ध हो।

7.(क) कार्यक्रम के लक्षित समूह में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम, 1992 के अनुच्छेद 2(ग) के अंतर्गत अधिसूचित अल्पसंख्यकों अर्थात् मुस्लिमों, ईसाइयों, सिखों, बौद्धों तथा जोरोएस्ट्रियन (पारसी) के पात्र वर्गों को शामिल किया गया है।

(ख) उन राज्यों में, जहां कोई एक अल्पसंख्यक समुदाय राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम, 1992 के अनुच्छेद (2) के अधीन अधिसूचित हो, अर्थात बहुसंख्यक हो तो विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत भौतिक/वित्तीय लक्ष्यों का निर्धारण केवल अन्य अधिसूचित अल्पसंख्यकों के लिए किया जाएगा। ये राज्य हैं जम्मू और कश्मीर, पंजाब, मेघालय, सिक्किम, मिजोरम तथा नगालैंड। लक्षद्वीप इस समूह में एकमात्र संघ शासित क्षेत्र है।

8. नया कार्यक्रम राज्य सरकारों/संघ शासित क्षेत्रों के माध्यम से संबंधित केन्द्रीय मंत्रालयों/विभागों द्वारा कार्यान्वित किया जाएगा। संबंधित मंत्रालय/विभाग इस कार्यक्रम के लिए एक नोडल अधिकारी नियुक्त करेगा जो न्यूनतम भारत सरकार के संयुक्त सचिव रैंक का होगा। अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय इस कार्यक्रम का नोडल मंत्रालय होगा।

9. भौतिक लक्ष्य तथा वित्तीय व्यय :

कार्यक्रम की जटिलता तथा इसकी व्यापक पहुंच को ध्यान में रखते हुए, जहां कहीं भी संभव होगा, संबंधित मंत्रालय/विभाग भौतिक लक्ष्यों तथा वित्तीय व्यय का 15 प्रतिशत अल्पसंख्यकों के लिए निर्धारित करेगा। इसका विभाजन निम्नलिखित पहलुओं पर निर्भर करते हुए देश में गरीबी की रेखा के नीचे रह रही कुल अल्पसंख्यक आबादी को ध्यान में रखकर राज्य/संघ शासित क्षेत्र विशेष में गरीबी की रेखा के नीचे रह रही आबादी के यथानुपात आधार पर राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों के बीच किया जाएगा :-

(क) (i) ग्रामीण क्षेत्र विशेष के लिए लागू योजनाओं के लिए ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी की रेखा के नीचे रह रही अल्पसंख्यक आबादी के केवल संगत अनुपात पर विचार किया जाएगा।

(ii) शहरी क्षेत्र विशेष के लिए लागू योजनाओं के लिए शहरी क्षेत्र में गरीबी की रेखा के नीचे रह-रही अल्पसंख्यक आबादी के केवल संगत अनुपात पर विचार किया जाएगा।

(iii) अन्यों के लिए, जहां इस प्रकार का अंतर संभव नहीं है, इनकी कुल संख्या पर विचार किया जाएगा।

(ख) पैरा 7(ख) में उल्लिखित राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों के मामले में अन्य बहुसंख्यकों के अलावा सिर्फ गरीबी की रेखा से नीचे रह रहे अल्पसंख्यकों के लिए ही भौतिक लक्ष्यों तथा वित्तीय व्यय का निर्धारण होगा।

10. इस प्रकार के निर्धारण के लिए निम्नलिखित योजनाएं पात्र हैं :

सूत्र सं.(क) शिक्षा अवसरों को बढ़ावा देना।

(1) एकीकृत बाल विकास सेवाओं की समुचित उपलब्धता। एकीकृत बाल विकास सेवाएं आंगनवाड़ी केन्द्रों के माध्यम से अपनी सेवाएं प्रदान करेगी।

(2) विद्यालयी शिक्षा की उपलब्धता को सुधारना।

सर्व शिक्षा अभियान, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना तथा इसी तरह की अन्य सरकारी योजनाएं।

सूत्र सं. (ख) आर्थिक कार्यकलापों और रोजगार में समुचित हिस्सेदारी

(7) गरीबों के लिए स्व-रोजगार तथा मजदूरी रोजगार।

(क) स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना

(ख) स्वर्ण जयंती शहरी रोजगारयोजना

(ग) संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना

(8) तकनीकी शिक्षा के माध्यम से कौशल उन्नयन को बढ़ाना।

नए औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) तथा मौजूदा प्रशिक्षण संस्थानों को उन्नत बनाना।

(9) आर्थिक क्रियाकलापों के लिए अभिवृद्धि ऋण सहायता।

(क) प्राथमिकता क्षेत्र के अंतर्गत बैंक ऋण देना

सूत्र सं.(ग) : अल्पसंख्यक समुदाय के व्यक्तियों के जीवनस्तर की दशा में सुधार करना।

(11) ग्रामीण आवास योजना में उचित हिस्सेदारी

इंदिरा आवास योजना

(12) अल्पसंख्यक समुदायों वाली मलिन बस्तियों की स्थिति में सुधार

एकीकृत आवास एवं मलिन बस्ती विकास कार्यक्रम और जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय शहरी नवीनीकरण कार्यक्रम

11. कार्यान्वयन, देखरेख तथा रिपोर्टिंग -

क. मंत्रालय/विभाग स्तर :

कार्यक्रम में शामिल योजनाओं को कार्यान्वित करने वाले मंत्रालय/विभाग भौतिक लक्ष्यों और वित्तीय व्यय के परिप्रेक्ष्य में इन योजनाओं का कार्यान्वयन करेंगे तथा इनकी देखरेख करेंगे। संबंधित मंत्रालय/विभाग इन कार्यक्रमों के अंतर्गत इन योजनाओं के संबंध में मासिक आधार पर कार्यक्रम की प्रगति की समीक्षा करेंगे और तिमाही आधार पर कार्यान्वयन प्रगति की रिपोर्ट अगली तिमाही के पन्द्रहवें दिन अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय को भेजेंगे।

ख. राज्य/संघ शासित क्षेत्र स्तर :

(i) राज्य/संघ शासित क्षेत्र अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए प्रधानमंत्री के नए 15 सूत्री कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए राज्य स्तरीय समिति का गठन करेंगे। समिति के अध्यक्ष मुख्य सचिव होंगे और इसके सदस्यों में 15 सूत्री कार्यक्रम के अधीन योजनाएं लागू करने वाले विभागों के सचिव और विभाग प्रमुख, पंचायती राज संस्थानों/स्वायत्त जिला परिषदों के प्रतिनिधि अल्पसंख्यकों से संबद्ध ख्यातिप्राप्त गैर-सरकारी संगठनों के तीन प्रतिनिधि तथा ऐसे तीन अन्य सदस्य जिन्हें राज्य सरकार/संघ शासित क्षेत्र द्वारा उपयुक्त समझा गया हो, शामिल होंगे। राज्य/संघ शासित क्षेत्र के अल्पसंख्यकों से संबद्ध विभाग 15 सूत्री कार्यक्रम की देखरेख के लिए नोडल विभाग बना सकते हैं। समिति के हर तिमाही में कम-से-कम एक बार अपनी बैठक करनी होगी तथा राज्य/संघ शासित क्षेत्र के अल्पसंख्यकों से संबद्ध विभाग अगली तिमाही के पन्द्रहवें दिन अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय को तिमाही प्रगति रिपोर्ट भेज सकेंगे।

(ii) जिला स्तर :

इसी तरह से, अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए प्रधानमंत्री के नए 15 सूत्री कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए जिला स्तर पर जिला स्तरीय समिति का गठन कर सकते हैं। कार्यक्रम कार्यान्वित करने वाले विभागों के जिला स्तरीय अधिकारियों, पंचायती राज संस्थानों/स्वायत्त जिला परिषदों, अल्पसंख्यकों से संबद्ध ख्यातिप्राप्त संस्थानों के तीन प्रतिनिधियों सहित जिले के कलेक्टर/उपायुक्त इसके प्रमुख होंगे। जिला स्तरयी समिति कार्यान्वयन की प्रगति रिपोर्ट को राज्य स्तरीय समिति के समक्ष प्रस्तुत करने से पूर्व अल्पसंख्यकों से संबद्ध मंत्रालयों/विभागों को पेश करेगी।

ग. केन्द्रीय स्तर :

(i) केन्द्रीय स्तर पर लक्ष्यों के परिप्रेक्ष्य में कार्यान्वयन की प्रगति की देखरेख छमाही में एक बार सचिवों की समिति करेगी और अपनी रिपोर्ट केन्द्रीय मंत्रिमंडल को प्रस्तुत करेगी। अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय नोडल मंत्रालय के रूप में इस संबंध में अपनी रिपोर्ट तैयार करेगा और उसे छमाही में एक बार सचिवों की समिति और केन्द्रीय मंत्रिमंडल के समक्ष प्रस्तुत करेगा। इस कार्यक्रम के संबंध में सभी संबंधित मंत्रालय/विभाग अपनी तिमाही रिपोर्ट अगली तिमाही के पन्द्रहवें दिन अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय को प्रस्तुत करेगा।

(ii) अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए प्रधानमंत्री के नए 15 सूत्री कार्यक्रम के लिए एक पुनरीक्षा समिति होगी। सभी संबंधित मंत्रालयों/विभागों के नोडल अधिकारियों सहित अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय का सचिव इस समिति का प्रमुख होगा। प्रगति की समीक्षा करने, फीडबैक प्राप्त करने, समस्याओं को सुलझाने तथा स्पष्टीकरण प्रदान करने के लिए, जैसा भी आवश्यक हो, इस समिति की बैठक प्रत्येक तिमाही में एक बार होगी।

THE LIKELY IMPACT OF INCLUSION OF JAINS AS NATIONAL RELIGIOUS MINORITIES UNDER SECTION 2 (C) OF NATIONAL COMMISSION FOR MINORITIES ACT, 1992:

(1) **Social, Economic & Educational**

Prime Minister's 15 Point Programme for welfare of Minorities is enclosed herewith in Hindi & English. In it now Jains automatically stand included at all such places where the other 5 national minorities have been named. Similarly we will be entitled to all benefits under the said scheme as are available to other national religious minorities.

Under the said programme the Jain community can now seek greater resources for teaching Prakrit and can also press the respective state governments as well as central education bodies like NCERT to include Prakrit as a more mainstream subject like Sanskrit and Urdu.

Jain educational institutions will enjoy a far greater degree of autonomy in their day to day working and management as is enjoyed by a Madrasa with less interference from Education Board / Departments.

Jain educational institutions will be eligible for central funds to improve and modernize and upgrade themselves.

Jain educational institutions will not be required to seek yearly minority certificate from respective state governments. This is however subject to the relevant rules and regulations of each state.

(2) **Legal**

Under Section 9 of National Commission for Minorities Act, 1992 the National Commission has the following powers:

i. *The Commission shall perform all or any of the following functions, namely:-*

- *a.* *evaluate the progress of the development of Minorities under the Union and States.*
- *b.* *monitor the working of the safeguards provided in the Constitution and in laws enacted by Parliament and the State Legislatures.*
- *c.* *make recommendations for the effective implementation of safeguards for the protection of the interests of Minorities by the Central Government or the State Governments.*
- *d.* *look into specific complaints regarding deprivation of rights and safeguards of the Minorities and take up such matters with the appropriate authorities.*
- *e.* *cause studies to be undertaken into problems arising out of any discrimination against Minorities and recommend measures for their removal.*
- *f.* *conduct studies, research and analysis on the issues relating to socio-economic and educational development of Minorities.*
- *g.* *suggest appropriate measures in respect of any Minority to be undertaken by the Central Government or the State Governments.*
- *h.* *make periodical or special reports to the Central Government on any matter pertaining to Minorities and in particular the difficulties confronted by them.*

i. *any other matter which may be referred to it by the Central Government.*

ii. *The Central Government shall cause the recommendations referred to in clause (c) of sub-section (1) to be laid before each House of Parliament along with a memorandum explaining the action taken or proposed to be taken on the recommendations relating to the Union and the reasons for the non-acceptance, if any, of any of such recommendations.*

iii. *Where any recommendation referred to in clause (c) of sub-section (1) or any part thereof is such with which any State Government is concerned, the Commission shall forward a copy of such recommendation or part to such State Government who shall cause it to be laid before the Legislature of the State along with a memorandum explaining the action taken or proposed to be taken on the recommendations relating to the State and the reasons for the non-acceptance, if any, of any of such recommendation or part.*

iv. *The Commission shall, while performing any of the functions mentioned in sub-clauses (a), (b) and (d) of sub-section (1), have all the powers of a civil court trying a suit and, in particular, in respect of the following matters, namely:-*

- *a.* *summoning and enforcing the attendance of any person from any part of India and examining him on oath.*
- *b.* *requiring the discovery and production of any document.*
- *c.* *receiving evidence of affidavits.*
- *d.* *requisitioning any public record or copy thereof from any court or office.*
- *e.* *issuing commissions for the examination of witnesses and documents; and*
- *f.* *any other matter which may be prescribed.*

Under Section 9 (i) (d) quoted *ibid* Jain community can approach the National Commission for Minorities in relation to complaints regarding deprivation of our rights. Theoretically in such cases the National Commission can initiate its own proceedings by virtue of the powers vested in in under Section 9 (iv) and can also suggest safeguards and take up the matter with appropriate authorities.

In cases where Jain community have been targeted specifically in communal riots (Example – Kesariya Ji), the National Commission can play a very strong and active role specifically if the State Government is not doing the needful.

Prime Minister's New 15 Point Programme for the Welfare of Minorities

(A) Enhancing opportunities for Education

(1) Equitable availability of ICDS Services

The Integrated Child Development Services (ICDS) Scheme is aimed at holistic development of children and pregnant/lactating mothers from disadvantaged sections, by providing services through Anganwadi Centres such as supplementary nutrition, immunization, health check-up, referral services, pre-school and non-formal education. A certain percentage of the ICDS projects and Anganwadi Centres will be located in blocks/villages with a substantial population of minority communities to ensure that the benefits of this scheme are equitably available to such communities also.

(2) Improving access to School Education

Under the Sarva Shiksha Abhiyan, the Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya Scheme, and other similar Government schemes, it will be ensured that a certain percentage of all such schools are located in villages/localities having a substantial population of minority communities.

(3) Greater resources for teaching Urdu

Central assistance will be provided for recruitment and posting of Urdu language teachers in primary and upper primary schools that serve a population in which at least one-fourth belong to that language group.

(4) Modernizing Madarsa Education

The Central Plan Scheme of Area Intensive and Madarsa Modernization Programme provides basic educational infrastructure in areas of concentration of educationally backward minorities and resources for the modernization of Madarsa education. Keeping in view the importance of addressing this need, this programme will be substantially strengthened and implemented effectively.

(5) Scholarships for meritorious students from minority communities

Schemes for pre-matric and post- matric scholarships for students from minority communities will be formulated and implemented.

(6) Improving educational infrastructure through the Maulana Azad Education Foundation

The Government shall provide all possible assistance to Maulana Azad Education Foundation (MAEF) to strengthen and enable it to expand its activities more effectively.

(B) Equitable Share in Economic Activities and Employment

(7) Self-Employment and Wage Employment for the poor

(a) The Swarnjayanti Gram Swarojgar Yojana (SGSY), the primary self-employment programme for rural areas, has the objective of bringing assisted poor rural families above the poverty line by providing them income generating assets through a mix of bank credit and Governmental subsidy. A certain percentage of the physical and financial targets under the SGSY will be earmarked for beneficiaries belonging to the minority communities living below the poverty line in rural areas.

(b) The Swarn Jayanti Shahari Rojgar Yojana (SJSRY) consists of two major components namely, the Urban Self-Employment Programme (USEP) and the Urban Wage Employment Programme (UWEP). A certain percentage of the physical and financial targets under USEP and UWEP will be earmarked to benefit people below the poverty line from the minority communities. (c) The Sampurna Grameen Rozgar Yojana (SGRY) is aimed at providing additional wage employment in rural areas alongside the creation of durable community, social and economic infrastructure. Since the National Rural Employment Guarantee Programme (NREGP) has been launched in 200 districts, and SGRY has been merged with NREGP in these districts, in the remaining districts, a certain percentage of the allocation under SGRY will be earmarked for beneficiaries belonging to the minority communities living below the poverty line till these districts are taken up under NREGP. Simultaneously, a certain percentage of the allocation will be earmarked for the creation of infrastructure in such villages, which have a substantial population of minorities.

(8) Upgradation of skills through technical training

A very large proportion of the population of minority communities is engaged in low-level technical work or

Anger burns the nature of man just like fire burns things.

earns its living as handicraftsmen. Provision of technical training to such people would upgrade their skills and earning capability. Therefore, a certain proportion of all new ITIs will be located in areas predominantly inhabited by minority communities and a proportion of existing ITIs to be upgraded to 'Centres of Excellence' will be selected on the same basis.

(9) Enhanced credit support for economic activities

(a)The National Minorities Development & Finance Corporation (NMDFC) was set up in 1994 with the objective of promoting economic development activities among the minority communities. The Government is committed to strengthen the NMDFC by providing it greater equity support to enable it to fully achieve its objectives.

(b) Bank credit is essential for creation and sustenance of self-employment initiatives. A target of 40% of net bank credit for priority sector lending has been fixed for domestic banks. The priority sector includes, inter alia, agricultural loans, loans to small-scale industries & small business, loans to retail trade, professional and self-employed persons, education loans, housing loans and micro-credit. It will be ensured that an appropriate percentage of the priority sector lending in all categories is targeted for the minority communities.

(10) Recruitment to State and Central Services

(a) In the recruitment of police personnel, State Governments will be advised to give special consideration to minorities. For this purpose, the composition of selection committees should be representative.

(b) The Central Government will take similar action in the recruitment of personnel to the Central police forces.

(c) Large scale employment opportunities are provided by the Railways, nationalized banks and public sector enterprises. In these cases also, the concerned departments will ensure that special consideration is given to recruitment from minority communities.

(d) An exclusive scheme will be launched for candidates belonging to minority communities to provide coaching in government institutions as well as private coaching institutes with credibility.

(C) Improving the conditions of living of minorities

(11) Equitable share in rural housing scheme

The Indira Awaas Yojana (IAY) provides financial assistance for shelter to the rural poor living below the poverty line. A certain percentage of the physical and financial targets under IAY will be earmarked for poor beneficiaries from minority communities living in rural

(12)Improvement in condition of slums inhabited by minority communities

Under the schemes of Integrated Housing & Slum Development Programme (IHSDP) and Jawaharlal Nehru National Urban Renewal Mission (JNNURM), the Central Government provides assistance to States/UTs for development of urban slums through provision of physical amenities and basic services. It would be ensured that the benefits of these programmes flow equitably to members of the minority communities and to cities/slums, predominantly inhabited by minority communities.

(D) Prevention & Control of Communal Riots

(13) Prevention of communal incidents

In the areas, which have been identified as communally sensitive and riot prone, district and police officials of the highest known efficiency, impartiality and secular record must be posted. In such areas and even elsewhere, the prevention of communal tension should be one of the primary duties of the district magistrate and superintendent of police. Their performances in this regard should be an important factor in determining their promotion prospects.

(14) Prosecution for communal offences

Severe action should be taken against all those who incite communal tension or take part in violence. Special court or courts specifically earmarked to try communal offences should be set up so that offenders are brought to book speedily.

(15) Rehabilitation of victims of communal riots

Victims of communal riots should be given immediate relief and provided prompt and adequate financial assistance for their rehabilitation.

~ o ~

अल्पसंख्यक जैन समाज द्वारा

झारखण्ड राज्य में पर्यटन के विकास एवं जैन तीर्थ यात्रियों की सुविधा हेतु

श्री सम्मेदशिखर मधुबन से पारसनाथ स्टेशन तक नई रेलवे लाइन बढ़ाये जाने की मांग

झारखण्ड जैन समाज ने कांग्रेस उपाध्यक्ष श्री राहुल गांधी को दिया ज्ञापन

रांची, 7 फरवरी। कांग्रेस उपाध्यक्ष श्री राहुल गांधी के रांची दौरे के कार्यक्रम के दौरान झारखण्ड प्रदेश जैन समाज रांची की ओर से एक प्रतिनिधि मण्डल श्री राहुल गांधी उपाध्यक्ष अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी से मिला और उन्हें केन्दीय स्तर पर जैनों को अल्पसंख्यक का दर्जा दिये जाने पर हार्दिक बधाई देते हुए आभार व्यक्त किया।

प्रतिनिधिमण्डल ने झारखण्ड राज्य में पर्यटन के विकास एवं विश्व प्रसिद्ध जैन तीर्थ श्री सम्मेदशिखर मधुबन को पारसनाथ स्टेशन तक नई लाइन (14 कि.मी.) बढ़ाये जाने की मांग करते हुए झारखण्ड प्रदेश जैन समाज की ओर से ज्ञापन भी दिया।

इस ज्ञापन के द्वारा अल्पसंख्यक जैन समाज द्वारा यह मांग की गई कि झारखण्ड के गिरिडीह जिला में स्थित तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर जैन धर्मावलंबियों का एक महान तीर्थ स्थान है। जहाँ जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में से 20 तीर्थंकरों का निर्वाण हुआ है। इस पवित्र तीर्थधाम की वंदना के लिए पूरे विश्व से प्रति वर्ष लाखों की संख्या में तीर्थयात्री अपनी श्रद्धा एवं भक्ति प्रदर्शित करने हेतु यहाँ आते हैं। प्रत्येक जैन धर्मावलम्बियों की यह कामना होती है कि वह अपने जीवन काल में इस महान तीर्थ के एक से अधिक बार वंदना करें लेकिन दुःख की बात है कि पिछले कई वर्षों के प्रयास के बावजूद यह स्थान रेल यातायात से नहीं जुड़ पाया। इस संबंध में झारखण्ड सरकार को लगातार इस रेल मार्ग को झारखण्ड सरकार की रेल परियोजनाओं में शामिल करने हेतु निवेदन किया गया है परन्तु अभी तक सरकार की नजर इस योजना पर नहीं पड़ी है। जबकि सरकार इस राज्य में पर्यटन के विकास हेतु निरंतर प्रयासरत है। विश्व के सबसे बड़े तीर्थ होने के कारण लगातार तीर्थ यात्रियों का तांता लगा रहता है। आज जहाँ भारत का प्रत्येक धार्मिक क्षेत्र रेल मार्ग से जुट चुका है वही यह महान तीर्थ रेल / पर्यटन मंत्रालय द्वारा घोर उपेक्षित है। पेट्रोल एवं डीजल की बढ़ती कीमतों ने तीर्थ यात्रियों की संख्या पर बड़ा प्रभाव डाला है। चारों तरफ फैली लगभग पचास (50) हजार की आबादी की रोजी-रोटी मुख्य रूप से तीर्थयात्रियों के आवागमन पर ही निर्भर है।

रेल द्वारा यातायात की सुविधा मिलने पर देश-विदेश के पर्यटकों को भी इस महा तीर्थ के दर्शन का लाभ मिल सकेगा। रोजगार के नए साधन उपलब्ध होंगे और पूरे क्षेत्र का विकास होगा। आस-पास की पूरी जनता के जीवन के स्तर में भी सुधार आएगा। रेल आने से यात्रियों की संख्या तिगुनी हो जाएगी। साथ ही रेल के जुटने से भाड़े के रूप में सरकारी राजस्व में अप्रत्याशित वृद्धि होगी। बोधगया जैसे पवित्र तीर्थस्थान की तर्ज राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसे विकसित किया जा सकता है। भारतवर्ष के प्रमुख पर्यटन/धार्मिक स्थल के रूप में यह स्थान अत्यन्त ही अनूठा, दर्शनीय एवं ऐतिहासिक है। झारखण्ड प्रान. ऐसी प्राकृतिक छटा एवं कलात्मक मंदिरों के दर्शन का अद्भुत स्थान कहीं और नहीं होगा।

अतः झारखण्ड प्रदेश जैन समाज भारत सरकार विशेषतया श्री राहुल गांधी से यह निवेदन करता है कि वे व्यक्तिगत रुचि लेकर संबंधित मंत्रालय से इसे शीघ्र पूरा कराने की कृपा करें। श्री राहुल गांधी से मुलाकात कर ज्ञापन देने में सर्वश्री नरेन्द्र पाण्ड्या, सम्पत लाल रामपुरिया, महावीर प्रसाद सोगानी, धर्मचन्द जैन 'रारा', अजय गंगवाल के अलावा अन्य लोग भी उपस्थित थे। मधुबन रेल परियोजना के इस महत्वपूर्ण कार्य में हजारीबाग के कर्मठ कार्यकर्ता श्री कमल विनायका जी सतत् प्रयत्नशील हैं।

- सुमन कुमार सिन्हा, मधुबन (शिखरजी)

कषाय करने वाले की बुद्धि सदा भ्रमित और संशयमान होती है।

श्रवणबेलगोला में महिला मंडल द्वारा भावभीनी गोदभराई

श्रवणबेलगोला में राष्ट्रीय अध्यक्ष का अभूतपूर्व स्वागत जुलूस

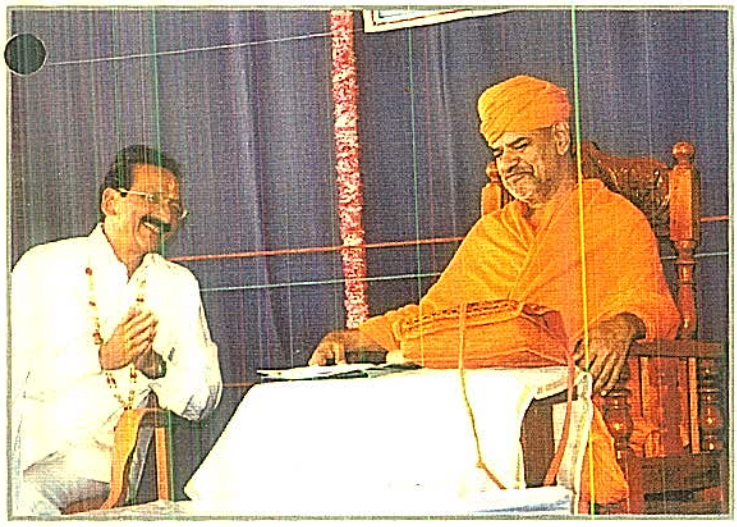

परम पूज्य भट्टारक स्वामी जी से चर्चा करते हुए श्री सुधीर जैन

श्री डी.आर.शाह एवं श्री विनोद बाकलीवाल द्वारा अभूतपूर्व स्वागत सम्मान

पूरे नगर भ्रमण में, मंगल आरती, बैंड बाजा, महिलाओं द्वारा मंगल कलशों से स्वागत, सभी नगरों के प्रधानों द्वारा शॉल, श्रीफल एवं मालाओं से स्वागत

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय मंत्री श्री विनोद बाकलीवाल एवं कर्नाटक अंचल के अध्यक्ष श्री डी.आर. शहा ने कर्नाटक प्रांत के इस दौरे के कार्यक्रम के आयोजन करने एवं उसे पूर्ण सफल बनाने में जो अथक प्रयास किया है उसके लिए भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी उनका तहे-दिल से आभार व्यक्त करती है।

यह आत्मा अपने ही सुख-दुःख का भोक्ता है।

तरुण मित्र परिषद द्वारा मधुबन (शिखरजी) में विकलांग कैम्प सम्पन्न

दिल्ली की प्रमुख समाजसेवी संस्था तरुण मित्र परिषद द्वारा मधुबन (श्री सम्मेदशिखरजी) के जिला गिरिडीह में आयोजित 21वाँ पोलियो करैक्टिव सर्जरी व विकलांग कैम्प 19 जनवरी, 2014 को सम्पन्न हो गया। परिषद के महासचिव श्री अशोक जैन ने बताया कि यह विराट विकलांग कैम्प गत 17 नवम्बर को जैन धर्मशाला में लगाया गया था जिसमें 18 नवम्बर को 43 पोलियोग्रस्त व अन्य कारण से उनके 70 टेढ़े पैरों को ऑपरेशन द्वारा सीधा कर प्लास्टर चढ़ाया गया था। इन सभी बच्चों की 1 दिसम्बर व 13 दिसम्बर, 2013 को पुनः जाँच व आवश्यकतानुसार चिकित्सा की गई व 42 बच्चों को कैलीपर्स व 10 विकलांगों को कृत्रिम पैर भी प्रदान किए गए। परिषद के संगठन सचिव श्री राकेश जैन के अनुसार इस कैम्प में सोसायटी फॉर पोलियो सर्जरी एंड केयर फॉर डिस्एबल्ड के ऑर्थेपिडिक सर्जन डॉ. अरुण जैन ने 19 जनवरी को ऑपरेशन किए गए सभी बच्चों के प्लास्टर हटाकर कैलीपर्स प्रदान किए, जिससे वे स्वयं के पैरों पर चलने योग्य हो जायेंगे।

श्रीमती अनीता जैन की स्मृति में आयोजित कैम्प के प्रमुख सहयोगी सर्वश्री प्रमोद कुमार जैन कागजी, प्रमुख उद्योगपति संतोष सरावगी, अशोक पाण्ड्या, जैन समाज व जिला प्रशासन ने पूर्ण सहयोग देकर कैम्प को स बनाया।

- अशोक जैन, दिल्ली
महासचिव - तरुण मित्र परिषद

प.पू.गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज का 81 पिच्छी के विशाल संघ के साथ ललितपुर (उ.प्र.) में मंगल आगमन

28 जनवरी, 2014 साढूमल जिला-ललितपुर में परमपूज्य गणाचार्यश्री विरागसागरजी महाराज के विश्व के सबसे बड़े श्रमण संघ का ग्रामीण जैन-जैनेतर समाज ने भव्य अगवानी की। ग्रामीण महिलाओं ने 51 मंगल कलश तथा दीपकों से आरती उतारी। ग्राम में द्वार-द्वार पर चौक पूर कर परमपूज्य गणाचार्य श्री का पाद प्रक्षालन किया। ठीक 20 वर्ष बाद ग्राम में पुनः पधारे परमपूज्य गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज का स्वागत ठीक उसी प्रकार से हुआ जैसे 14 वर्ष के बाद पुरुषोत्तम श्री राम का अयोध्या लौटकर आने पर अयोध्या वासियों ने किया था। श्री दिगम्बर जैन संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय साढूमल के 200 छात्र-छात्राओं ने भी विशाल संघ की अगवानी की।

- सुरेश कुमार जैन (भगवां), साढूमल

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ (इंदौर) में अष्टम जैनेन्द्र वर्णी व्याख्यानमाला सम्पन्न

18 जनवरी, 2014. कुन्द कुन्द ज्ञानपीठ (इंदौर) में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली व्याख्यानमाला में इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विदुषी डॉ. नीलम जैन (पुणे) सम्पादिका- 'दिव्यदेशना' को 'विदेशों में जैन धर्म और समाज का दायित्व' विषय पर आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. ए.अब्बासी पूर्व कुलपति अहिल्या देवी होल्कर विश्वविद्यालय इंन्दौर ने की। डॉ. नीलम जैन ने विदेशों में अपने अनुभव के आधार पर कहा कि प्राचीन काल में भी तत्कालीन समस्त वैज्ञानिक तकनीक धर्मप्रचार में उपयोग की जाती थी। समस्त आगम में वह स्पष्ट परिलक्षित हैं। वर्तमान में निष्णात आधुनिक तकनीक विशेषज्ञ जैन युवाओं को जैन धर्म के प्रशिक्षण हेतु भी प्रेरित करना होगा। उन्होंने आगम के अनेक कथानकों एवं दृष्टांतों से अपने कथन को परिपुष्ट किया तथा विदेशी लाइब्रेरी के ढंग की लाइब्रेरी बनाने का भी सुझाव दिया साथ ही आगम में निहित वैज्ञानिक तथ्यों की सूची तैयार करने पर भी बल दिया। उपस्थित सुधीजनों ने डॉ. नीलम के लम्बे व्याख्यान के पश्चात अनेक प्रश्नों का भी उनसे समाधान प्राप्त किया। सशक्त संचालन संस्था के शोध निदेशक एवं सचिव डॉ. अनुपम जैन ने किया। पं. जयसेन जी ने वर्णी जी के कृतित्व पर प्रकाश डाला। संस्था के अध्यक्ष श्री अजितसिंह जी कासलीवाल ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

- डॉ. ममता जैन, पुणे

हिन्दी समर्थ है, समृद्ध है - इसे हृदय में बसाना है

- डॉ. नीलम जैन, मगरपट्टा सिटी (पुणे)

जनवरी, 2014 अंक सम्मुख है। आ. अध्यक्ष महोदय ने अध्यक्षीय शुभकामना आलेख के अंतर्गत मातृभाषा हिन्दी को सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठापना का आह्वान किया, वह पढ़कर मन गद्‌गद् हो गया। बिडम्बना है भारत मां के भाल की बिन्दी हिन्दी को भारत में ही सम्मान दिलाने के प्रयास करने पड़ रहे हैं जबकि विदेशों में हिन्दी प्रशिक्षण का मेरा अनुभव रोमांचकारी है। स्कूल्स की छुट्टियों में भी वहाँ कैम्पस के प्रति आकर्षह है तो जैन सैण्टर्स में भी अपनी जैन समाज के बच्चे हिन्दी लिखनी व बोलनी न भूल जाएं इसके लिए विशेष हिन्दी कक्षाएं लगती हैं और अभिभावक इसमें पूर्ण रुचि लेते हैं।

आंकड़ों के अनुसार अमेरिका के 51 कॉलेजों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है, जिसमें कुल 1430 छात्र पढ़ रहे हैं। अमेरिका के ही पेनिन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय में एम.बी.ए. के छात्रों के लिए हिन्दी का 2 वर्ष का कोर्स चल रहा है। ब्रिटेन, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, कनाडा, जर्मनी, सिंगापुर, पोलैण्ड, कोरिया और जापान आदि लगभग 60 देशों में हिन्दी की पढ़ाई हो रही है। अनेक हिन्दी की पत्र / पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं।

मैं अपने एक विदेशी हिन्दी के अध्येता छात्र निकोलस के विचार रख रही हूँ- उनका कहना है कि जब लोग मुझसे कहते हैं- 'अमेरिकन होकर भी हिन्दी क्यों पढ़ते हो?' तब मैं कहता हूँ - मैं हिन्दी क्यों नहीं सीख सकता, जब भारतीय अंग्रेजी पढ़कर अमेरिका की बड़ी-बड़ी कंपनियों में काम कर सकते हैं तो मै हिन्दी पढ़कर भारत क्यों नहीं जा सकता?'

मैं भारत भ्रमण करूँगा, भारत एक बड़ी अर्थ-व्यवस्था है, बड़ी बॉलीवुड इण्डस्ट्री है। मैं उनके गाने समझूंगा, गाऊँगा, फिल्म करूँगा, साथ ही भारतीय मित्र बनाकर अपनी दुनिया विस्तृत करूँगा। अमेरिका में मैंने इस वर्ष 50 कॉलेज छात्रों को हिन्दी पढ़ाई।

हम, दूसरी भाषा सीखें, ज्ञान के लिए विकास के लिए, लेकिन अपनी भाषा को जिएं और जीवित रखें। उस भाषा में सारी दुनिया के ज्ञान को समाहित कर उसे व्यापक बनायें। हिन्दी में हमारा हृदय है और हम भारतीयों को जोड़े रखने की सशक्त कड़ी है। हम कितनी भी अंग्रेजी बोलें और लिखें पर जब भावनाओं की बात आती है, दिल का प्रसंग होता है, घर गाँव याद आता है, माँ दादी की याद सताती है तो हिन्दी ही हमारे कण्ठ से फूटती है।

आज विश्व के सभी भाषाओं के साहित्य और लेखकों को उनकी भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में पढ़ाया जा सकता है किन्तु हमारी हिन्दी की पुस्तकों और अच्छे साहित्यकारों को भारत में ही रखा जाता है।

विचार करें, हमारे साहित्य में कुछ विशेष था तभी तो हर्मन जैकोबी, कनिंघम जैसे विदेशी विद्वानों ने हमारी भाषा सीखी और उनका तलस्पर्शी अध्ययन किया और आज भी अनेक विदेशी विद्वान अग्रसर हैं।

आज विशेष आवश्यकता है हिन्दी की महिमा और गरिमा को पहचानकर अपनी भाषा में ही समस्त वैश्विक ज्ञान को समाहित कर और समाहित ज्ञान जन-जन तक प्रसारित करने की। हमारी हिन्दी हर प्रकार से समृद्ध है और अपनी अतुल शब्द सम्पदा से सब कुछ हृदयंगम करने और प्रकट करने में सक्षम है- हमें पूर्ण ईमानदारी से हिन्दी को सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठापित करने के लिए संकल्पित होना चाहिए।

धर्म एक वृक्ष है कोई पत्थर तो नहीं

- जैन मित्र शैलेन्द्र घिया, मुंबई

धर्म और सोचना साथ-साथ चलते हैं। फिर भी कभी-कभी हम सुनते हैं, धर्म के विषय में तर्क मत करो, जो पुराना लिखा या कहा गया है सो अंतिम है। अगर यह बात सही है, तो तीर्थंकर आदिनाथ के बाद किसी के सोचने का कुछ बाकी ही नहीं रहा होना चाहिए था। क्या उनके बाद जो तीर्थंकर या बड़े-बड़े महान जैन साधु हुए हैं उनके सोचने की जरूरत नहीं थी? ऐसा तो प्रतीत नहीं होता। आगे चलते साधारण तौर पर एक-दो व्यक्ति की सोच गलत हो सकती है, पर किसी विचार पर खुले दिमाग से किसी विशेष संगोष्ठी में चर्चा की जाय और निर्णय लिया जाय तो वह कई मायने में सही हो सकता है। सोचना एक जबर्दस्त, जीवित, अद्‌भुत प्रतिक्रिया है, और उससे दुनिया चलती है। इसका अर्थ यह भी है कि बहुत कुछ जानना बाकी है कि सम्पूर्ण सत्य अभी भी पाया नहीं है। हर युग का योगदान होता है और कदम-कदम बढ़ कर एक दिन सर्व-मान्य सच जाहिर हो ही जायेगा। धर्म को कोई पत्थर न समझें जो हिले नहीं, और बदले भी नहीं। वह तो वृक्ष के समान है।

अच्छा और बुरा या फिर सही और गलत या फायदा-नुकसान एक-दूसरे का पीछा एवं आपस में कसा-कसी युगों से करते ही आए हैं। जो सरल होगा, जो लोगों के मन या दिमाग को भायेगा या प्रभावित करेगा या जिसकी बात में तथ्य होगा वह जीतेगा, जरूरी नहीं कि वह सत्य या सही ही हो। इसलिये गहरे सोच की प्रतिक्रिया जारी रहनी चाहिए। अब चमत्कार का जमाना नहीं रहा। धर्म में जान चाहिए जो हमारे शरीर में घुल-मिल जाये। हमारी प्रथाओं में गलतियाँ या कमियाँ पहचानें, अर्थ-निरर्थ को समझें, कुछ आधुनिकता का भी ध्यान रखें और जहाँ सुधार जरूरी है उसे अवश्य करें, नहीं तो हमें लोग छोड़ते जायेंगे, और हम शून्य-बराबर रह जायेंगे।

विचारों को बहुत संक्षिप्त में प्रस्तुत करना चाहिए, और याद रहे कि हीरे को आभूषण की जरूरत नहीं होती। हम जैनों में कितनी बड़ी-बड़ी किताबें प्रकाशित होती हैं, मगर पढ़ने वाले कहाँ हैं। एक किताब हाथ में लो तो कई दिन बीत जायेंगे और फिर लोगों को रोजी-रोटी भी तो साथ-साथ चलानी है। लेख बहुत केन्द्रित होने चाहिए, बहुत भूमिका बनाने की जरूरत नहीं है वरना 'ढेर में एक और' की स्थिति हो जायेगी। इच्छुक बगैर उठाए ही घबरा जायेगा और सोचता रह जायेगा कि ढेर में से क्या उठाऊँ। समस्या यह भी है कि अब पहले जैसा समय भी तो नहीं रहा लोगों के पास। अंत में जिज्ञासु भी कहेगा कि बाद में देखेंगे और बात वहीं समाप्त हो जायेगी।

हमारा जीवन अहिंसा के लिए समर्पित है, हिंसा के लिए नहीं।

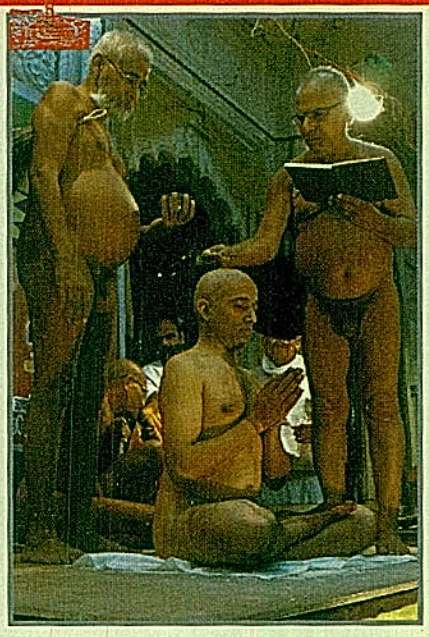

सोनागिरि में बा .ब्र. कपिल बने मुनि सुप्रभ सागर

आचार्य वर्द्धमान सागर ने प्रदान की मुनि दीक्षा

सोनागिरि । म.प्र. के खण्डवा के निवासी बा.ब्र.कपिल भैया ने 2 फरवरी को सिद्धक्षेत्र सोनागिरि दतिया (म.प्र.) में दिगम्बर मुनि दीक्षा ग्रहण की । प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की पट्ट परम्परा के वर्तमान पट्टाधीश आचार्य राष्ट्र गौरव, वात्सल्य वारिधि 108 श्री वर्द्धमान सागरजी महाराज ने अपने संघस्थ 26 पिच्छियों सहित सैकड़ों समाजजनों की उपस्थिति में बा.ब्र.कपिल भैया को दिगम्बर दीक्षा प्रदान कर मुनिश्री सुप्रभ सागर नाम प्रदान किया ।

– राजेन्द्र जैन 'महावीर'

प्रथम पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव

२६ जनवरी, २०१४ नोएडा, जिला- गाजियावाद (उत्तर प्रदेश)। श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के प्रथम पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में सराकोद्धारक आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज के पावन सानिध्य में रथयात्रा महोत्सव एवं आचार्यश्री विद्याभूषण सन्मतिसागर (महाराज) मुख्य द्वार के उद्घाटन पर सभा का शुभारम्भ मंगलाचरण से हुआ। पश्चात श्री सत्येन्द्र जैन (शंकर नगर) दिल्ली ने कविता पाठ कर कार्यक्रम को गति दी।

तत्पश्चात आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज ने अपनी अमृतमयी वाणी द्वारा कहा कि गणतंत्र दिवस के पावन दिन रथयात्रा और मुख्यद्वार का उद्घाटन आप सभी को जहाँ देशभक्ति का पाठ प.ढा रहा है, वहीं पर आचार्यश्री सन्मतिसागरजी महाराज के प्रति श्रद्धा-आस्था का पाठ प.ढा रहा है।

२५ जनवरी से ३१ जनवरी, २०१३ में इस मंदिर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आचार्यश्री विद्याभूषण सन्मतिसागरजी महाराज के पावन सानिध्य में हुआ था। आचार्यश्री तो हमारे बीच नहीं है पर आज एक साल पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आज का कार्यक्रम आप सभी ने किया। जिन-जिन ने भी प्रथम बार इस मंदिर के दर्शन किये, सभी कह उठे ऐसा लग रहा है जैसे किसी क्षेत्र के दर्शन कर रहा हूँ। बहुत सुंदर मंदिर है। मंदिर की शोभा जहां श्री पार्श्वनाथ प्रभु आदि की मनोज्ञ प्रतिमाओं से है, वहीं पर मंदिर की शोभा आने वाले श्रद्धालुओं से भी है।

वार्षिक उत्सव मनाना तभी सफल होगा, जब आप सभी इस मंदिर में आकर अपने बच्चों को संस्कार देंगे। मंदिर दूर है, ऐसा कहकर आप सभी मंदिर न आयें, बच्चों को न भेजें, तो उचित नहीं है। जब आप अपने-अपने कार्यों के लिये कई किलोमीटर दूर चले जाते हैं, बच्चों को कई किलोमीटर दूर स्कूल आदि भेज देते हो, पर मंदिर के प्रति अगर आप दूर का बहाना बनाते हैं तो फिर कैसे आप स्वयं संस्कारित होंगे एवं अपनी संतान को संस्कारित कर पायेंगे?

२६ जनवरी का दिन गणतंत्र दिवस के नाम से जाना जाता है। आज का दिन उन देशभक्तों की याद दिलाता है जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिये अपना बलिदान किया है। देश की स्वतंत्रता के लिये जैन समाज का भी योगदान रहा है। अनेकों ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिये अपना बलिदान किया है। जेलों में जाकर भी अपने नियमों के पालन के प्रति दृ.ढ रहे हैं। अमरचन्द्र बाटिया, रानी लक्ष्मीबाई, भगतसिंह, महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्र बोस आदि के जीवन की यादें, संस्मरण बताते हुये सभी को देशभक्ति के साथ प्रभु भक्ति की प्रेरणा दी। कुछ पंक्तियाँ याद दिलायी-

ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी।
जो शहीद हुये हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी।।

इसी के साथ आचार्यश्री ने स्वतंत्रता की प्राप्ति के पश्चात जो भी विधायक, सांसद, राज्यपाल आदि हुए हैं उनकी जानकारी दी। आज प्रातःकाल सैक.डों युवक जब अभिषेक करते हुये नजर आये, मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। स्याद्वाद युवा क्लब सभी सदस्य आगे भी इसी तरह धार्मिक श्रद्धा-आस्था जीवंत रखें, यही सद्भावना है। प्रवचन के पश्चात जनवरी २०१४ त्रिलोक तीर्थ पत्रिका का विमोचन हुआ।

तत्पश्चात आचार्यश्री विद्याभूषण सन्मति सागर मुख्य द्वार का उद्घ आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज के पावन सानिध्य में हुआ। तदनंतर मंदिर जी से विशाल रथयात्रा का भव्य जुलूस प्रारम्भ हुआ, जिसमें अनेकों झाँकियां जुलूस की शोभा ब.ढा रही थीं। कई सैक.डों की तादाद में स्त्री-पुरुष, युवक-युवतियाँ जय-जयकार के नारे लगाते हुये रथयात्रा में पैदल चल रहे थे। सेक्टर-५० के मुख्य मार्गों से होते हुये भव्य रथयात्र पुनः श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में आयी।

श्रद्धांजलि

श्रीमती राजेश्वरी देवी धर्मपत्नी प्रा.श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन, फिरोजाबाद

श्रीमती राजेश्वरी देवी धर्मपत्नी प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन, जैन दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान व संस्थापक श्रुतसेवा निधि न्यास फिरोजाबाद का 78 वर्ष की उम्र में समाधि पूर्वक दिनांक 25 जनवरी, 2014 को निधन हो गया है। वे धर्मानुरागी, कर्तव्य परायण, मुनि भक्त, संस्कारित वात्सल्यमयी ममता को समर्पित श्राविका मां थीं। उनका अवसान हृदय विदारक घटना है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शोक संतप्त कुटुम्बीजनों को यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति मिले, ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना करता है।

मनुष्य एक क्षण में जो कर्म बांधता है उसे भव-भवांतरों तक भोगना पड़ता है।

सतना स्टेशन पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन का स्वागत एवं सतना में आयोजित कल्पद्रुम महामंडल विधान की झलकियां

इन्दौर में परवार दिगम्बर जैन समाज द्वारा स्वागत, सम्मान

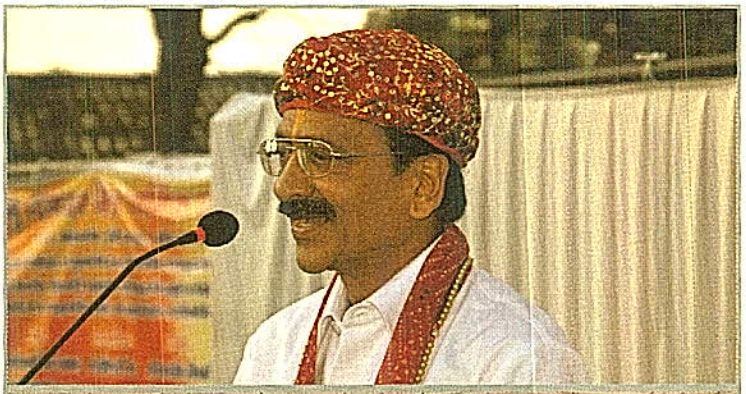

कषाय करने वाले की बुद्धि सदा भ्रमित और संशयमान होती है।

श्री सम्मेदशिखरजी एवं अन्य मुख्य स्थानों की टेलीफोन एवं अग्रिम आरक्षण तालिका

पूर्व मध्य रेल
पारसनाथ स्टेशन
समय सारणी

मुगलसराय की ओर — अप | कोलकाता की ओर — डाउन

ट्रेन नम्बर	आगमन	प्रस्थान	ट्रेन का नाम	ट्रेन नम्बर	आगमन	प्रस्थान
11046	14:32	14:34	धनबाद – कोल्हापुर (दीक्षा भूमि एक्स0)	11045	11:04	11:06
	सोमवार				रविवार	
12175	23:23	23:28	हावड़ा ग्वालियर चम्बल एक्प्रेस	12176	01:05	01:10
	रवि. मंगल.	बुध			बुध. शुक.	रवि.
12177	23:23	23:28	हावड़ा आगरा कैन्ट चम्बल एक्सप्रेस	12178	01:05	01:10
	शुक्रवार				मंगलवार	
12301	23:37	20:39	हावड़ा नई दिल्ली कोलकाता राजधानी एक्स	012302	05:54	05:56
	रविवार	छोडकर			शनिवार	छोड़कर
12307	03:52	03:57	हावड़ा जोधपुर एक्सप्रेस प्रतिदिन	12308	22:26	22:31
12311	00:30	00:33	हावड़ा दिल्ली कालका मेल प्रतिदिन	12312	01:51	01:56
12321	02:58	03:01	हावड़ा मुम्बई मेल (इलाहाबाद) प्रतिदिन	12322	05:15	05:17
12366	17:46	17:48	राँची – पटना जनशताब्दी एक्प्रेस	12365	10:24	10:26
12381	12:42	12:44	हावड़ा – नई दिल्ली पूर्वा एक्सप्रेस	12382	11:25	11:27
	बुध.	गुरू. रवि.			मंगल.	बुध. शनि
12801	11:15	11:20	पुरी नईदिल्ली पुरूषोतम एक्स.(टाटा)प्रतिदिन	12802	15:42	15:47
12815	23:31	23:36	पुरी नई दिल्ली नन्दनकानन एक्सप्रेस (आद्रा)	12816	23:20	23:25
			सोम. बुध. गुरू. शनि			
12875	00:44	00:49	पुरी नई दिल्ली नीलांचल एक्सप्रेस (टाटा)	12876	02:28	02:30
			सोम. बुध. शनि			
12942	21:33	21:38	आसनसोल अहमदाबाद पारसनाथ एक्प्रेस गुरूवार	12941	08:00	08:05
12987	04:09	04:11	सियालदह – अजमेर एक्सप्रेस	12988	09:52	09:54
13009	02:18	02:23	हावड़ा – देहरादून एक्सप्रेस प्रतिदिन	13010	00:01	00:04
13151	17:55	18:10	कोलकाता – जम्मूतवी एक्सप्रेस प्रतिदिन	13152	09:16	09:21
13305	06:47	06:49	धनबाद – गया इंटरसिटी एक्सप्रेस प्रतिदिन	13306	20:27	20:29
13307	22:10	22:15	धनबाद – फिरोजपुर एक्सप्रेस प्रतिदिन	13308	03:35	03:40
13329	23:57	23:59	गंगा दामोदर एक्सप्रेस प्रतिदिन	13330	04:12	04:14
18624	00:09	00:14	हटिया–राजेन्द्र नगर–हटिया एक्सप्रेस प्रतिदिन	18623	03:05	03:07
18626	10:09	10:11	हटिया – राजेन्द्र नगर एक्सप्रेस प्रतिदिन	18625	16:20	16:22
22912	23:23	23:28	हावड़ा इन्दौर शिप्रा एक्सप्रेस	22911	01:05	01:10
53521	09:30	09:35	आसनसोल – वाराणसी पैसेन्जर प्रतिदिन	53522	16:51	16:56
63549	16:23	16:25	धनबाद – गया ई0 एम0 यू0 प्रतिदिन	63550	08:42	08:43
12357	16:39	16:41	कोलकाता – अमृतसर दुर्गयाना एक्सप्रेस	12358	06:39	06:41
	मंगल.	शनि.			सोम.	गुरू.

झारखण्ड एवं बिहार के प्रमुख तीर्थक्षेत्र का सड़क मार्ग दर्शन

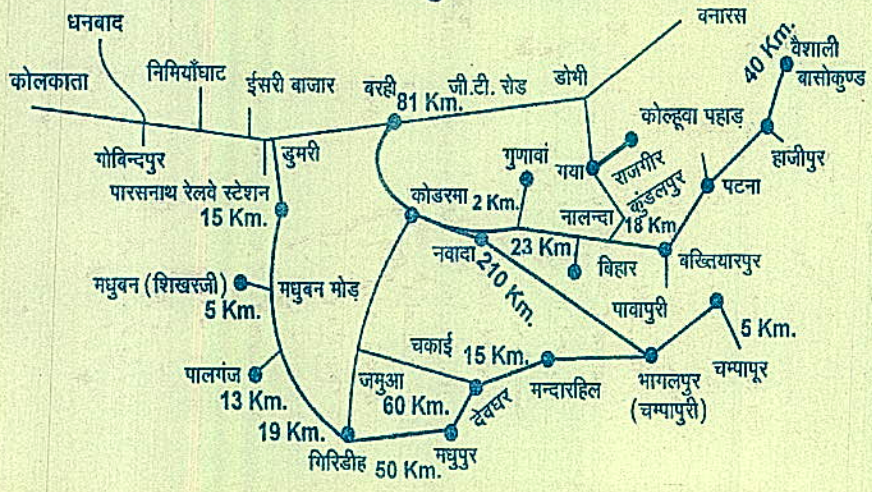

मधुबन स्थित संस्थाओं एवं मंदिरों के टेलीफोन/मोबाइल नं.

दिग. जैन शाश्वत विहार	06558- 232378	09431395497
दिग. जैन शाश्वत भवन	06558-232377	09608188948
भोजनालय शाश्वत भवन	06558-232314	09434934643
नाहर भवन	06558-232454	09430715244
उत्तरप्रदेश प्रकाश भवन	232366, 232367,	232371
शिखरजी कॉन्टीनेन्टल	06558-232429	09162171583
जहाज मन्दिर (सराक भवन)	09431532387	
कुन्दकुन्द कहान ट्रस्ट	06558-232449	07250506682
धर्ममंगल जैन विद्यापीठ	06558-232230,	232306
यात्री निवास	06558-232265	08102761253
श्रमण संस्कृति विन्यास(गुरूकुल)	06558-232291	09801319800
भरत कुसुम मोदी भवन	06558-232347,	232458
गुणायतन ट्रस्ट भवन	06558-232438,	08521619430
अणिन्दा पार्श्वनाथ भवन	06558-232215	09431573578
लबेन्च्यु मैत्रीय भवन	09425336353,	9431505685
तारण तरण भवन	09608190111,	09798753181
दिग. जैन म्यूजियम	09631003339	
जैन म्यूजियम	8051013903	
भोमिया भवन	06558-232203	09431506203
कच्छी धर्मशाला	06558-232225,	09431506208
जैन भवन	09431453274,	09431389548
श्री सेवायतन ट्रस्ट	06558-232428	09431144901
सन्मति साधना सदन	06558-232218	
शान्ताबा अन्नक्षेत्र भवन	09430787397,	09470984664
त्रियोग आश्रम	06558-232252	09661219381
त्यागी व्रती आश्रम	09431885291	
दिग. जैन तेरापंथी कोठी	06558-232292	08651950768
श्वेताम्बर जैन सो. धर्मशाला	06558-232226,	232260
मध्यलोक शोध संस्थान	06558-232257	09471972887
दिग. जैन बीसपंथी कोठी	06558-232228,	09801433599
सरस्वती भवन	09308442511	
बाहुबली चौबीसी मंदिर	09905339602	
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन	06558-232270,	232370
तीर्थक्षेत्र कमेटी	09431387704	
दिग. जैन समवशरण मंदिर	09905339602	
विमल समाधि मंदिर	08651092743	
दिग. जैन तीस चौबीसी मंदिर	09430165495	

ट्रेवल्स एजेन्ट्स

करण ट्रेवल्स	09470965192	
मगध ट्रेवल्स	07352458214,	09431745899
पारसनाथ ट्रेवल्स	09431194547,	09661500319
शिखरजी ट्रेवल्स	09939805352,	09939814403
पंचतीर्थ टूर्स एण्ड ट्रेवल्स	09431182091,	09470328141
जैन टूर एण्ड ट्रेवल्स	07250111361,	09431337361

अन्य सुविधाएँ

डॉ. यू.एन. सिंह, चिकित्सा अधिकारी	09431920788	
डॉ. ओ.पी. सिंह, चिकित्सा अधिकारी	09470361649	
दिग. जैन हास्पिटल	09431920788	
श्वेताम्बर जैन हॉस्पिटल	06558-232237	
सपना होटल	06558-232234	
बैंक ऑफ इण्डिया	06558-232227	
पुलिस चौकी	06558-232346	
पोस्ट ऑफिस	06558-232223	
टेलीफोन एक्सचेंज	06558-232298,	232299
रेलवे आरक्षण केन्द्र (रविवार बंद) प्रातः 8 से दोपहर 2 बजे,		09608698365
मोदी टेलीकॉम	06558-232433	09431167200
ऋद्धि कम्प्यूटर	09431506183,	08051032053

क्रोध अज्ञान से प्रारम्भ होता है और पश्चाताप पर समाप्त होता है।

शिखरजी से बाहर

पुलिस स्टेशन पीरटांड, चिरकी	06558-231249, 09431706346
पीरटांड हॉस्पिटल	06558-231308
दिग. जैन बीसपंथी कोठी इसरी बाजार	06558-233254, 09430784469
दिगम्बर जैन तेरापंथी कोठी इसरी बाजार	08969166934
उदासीन आश्रम इसरी बाजार	09308125312, 09430350839
पारसनाथ रेलवे स्टेशन	06558-233419
रेलवे पूँछताछ कम्प्यूटरीकृत	139
दिग. जैन मंदिर निमियाघाट	09572858445, 07549032470
डी.सी. कार्यालय गिरिडीह	06532-222001, 09431144644
एस.पी. कार्यालय गिरिडीह	06532-222054, 09431706326
डी.एस.पी. गिरिडीह	06532-222719
दिग. जैन बीसपंथी कोठी गिरिडीह दिग. जैन तेरापंथी कोठी गिरिडीह	06532-222923, 09934533902
दिग. जैन मंदिर देवघर	06432-290573, 09771319759
दिग. जैन सिद्धक्षेत्र मंदारगिरि	09507026319, 08809531730
मंदारगिरि पर्वत	09525478865
दिग. जैन बीसपंथी कोठी चम्पापुर	0641-2500522, 09472463388
दिग. जैन तेरापंथी कोठी चम्पापुर	0641-2500241, 09431248739
दिग. जैन सिद्धक्षेत्र गुणावा जी	09304535481, 09334837581
दिग. जैन सिद्धक्षेत्र पावापुरी	09931228733, 08002831990
दिग. जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर	093304376771, 08521496580
श्री दिगम्बर जैन नंद्यावर्त महल कुण्डलपुर	09431022376, 06112281846
दिग. जैन सिद्धक्षेत्र राजगृही	09334008611, 09334770317
राजगृही पर्वत	09334770321
वीरायतन राजगृही	06511-2255240, 2255172
दिग. जैन सिद्धक्षेत्र कोल्हुआ पहाड	09431170479, 09304857844
दिग. जैन मंदिर गुलजारबाग पटना	09386152398, 09835620074
दिग. जैन मंदिर जमुई	09386602348, 09334602348
दिग. जैन मंदिर वैशाली	06224-229527
गोपाल टूर एण्ड ट्रेवल्स बोध गया	09934422275
गायत्री टूर एण्ड ट्रेवल्स पटना	09973030501, 09386816700
स्थाई टूर एण्ड ट्रेवल्स रॉंची	0651-2562571

कमरों के अग्रिम आरक्षण हेतु सम्पर्क करें

दिग. जैन शाश्वत विहार (निहारिका) फोन – 06558-232378

प्रबंधक– श्री संजीव जैन 09431395497 email- shashwattrust95@gmail.com

दिग. जैन शाश्वत भवन फोन – 06558-232377

प्रबंधक– श्री प्रद्युम्न जैन 09608188948] 09934934643 email- shashwattrust95@gmail.com

उत्तरप्रदेश प्रकाश भवन, फोन – 06558-232366, 367, 371,

प्रबंधक– श्री इंद्रदेव शर्मा 09431509723 email- info@shikharjiup.org

कुन्दकुन्द कहान ट्रस्ट, फोन – 06558-232449

प्रबंधक– श्री प्रकाशचंद्र जैन 07250506682 email- kktrust1976@yahoo.com

यात्री निवास, फोन – 06558-232265 प्रबंधक– श्री महावीर जैन 08102761253

email- shikharjioffice@gmail.com

भरत कुसुम मोदी जैन भवन, फोन –06558-232347 प्रबंधक–श्री निरंजन जी 08877112656 09835983181 email- bharatkusummodijainbhawan@gmail.com

गुणायतन ट्रस्ट भवन, फोन – 06558-232438, 232453

प्रबंधक–श्री एन. एल. जैन 08521619430, 09471580119 email- gunayatnshikharjee@gmail.com

दिग. जैन तेरापंथी कोठी फोन – 06558-232292 प्रबंधक– श्री रमेश जैन 07352525524,

श्री प्रदीप जैन 08651950768 email-

दिग. जैन बीसपंथी कोठी फोन – 06558-232228 प्रबंधक– श्री मनोज जैन 07739397175]

श्री नागेन्द्र सिंह 09334385135 email- bpkmshikharji@rediffmail.com

अणिन्दा पार्श्वनाथ भवन प्रबंधक– श्री सुधीर जैन 09430165703

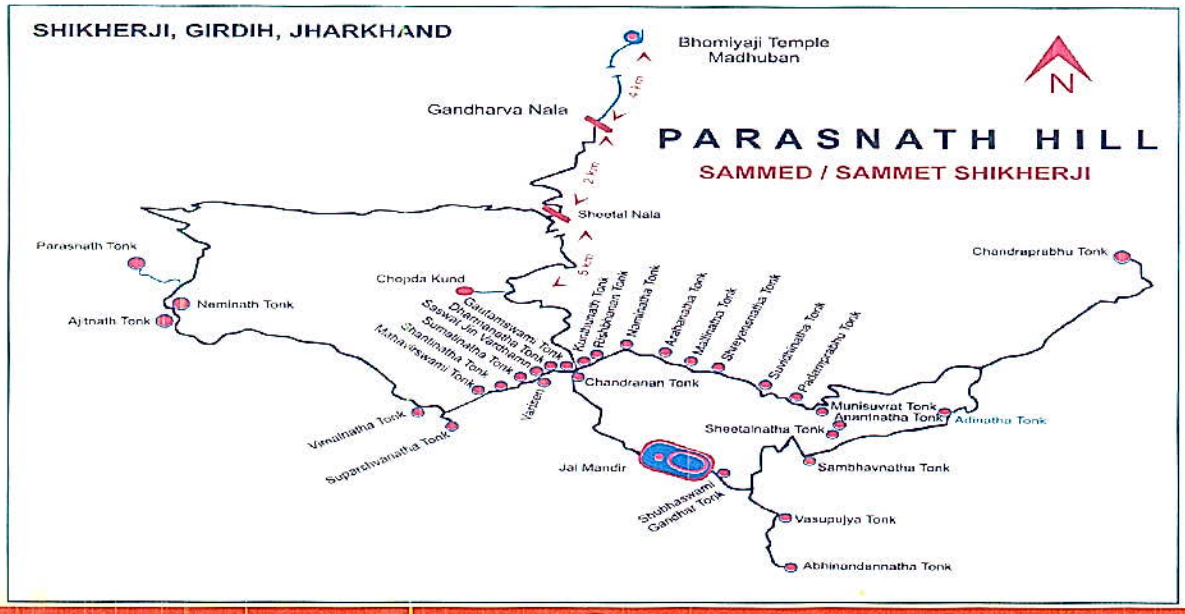

बिना प्रबल पुण्य के भगवान में भी भगवान नजर नहीं आते।

अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन 2014 संपन्न

आत्मा से परमात्मा बनाता है वीतराग विज्ञान - आ. ज्ञानसागरजी

भौतिक विज्ञान के साथ आध्यात्मिक विज्ञान भी आवश्यक – आ.ज्ञानसागरजी

यह पहला अवसर था कि आधुनिक संसाधनों से परिपूर्ण नईदिल्ली सिटी सेंटर में दिगम्बर जैन जगत की आचार्य श्री शांतिसागर महाराज (छाणी) परम्परा के षष्टम पट्टाधीश आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज संपूर्ण विश्व के प्रमुख वैज्ञानिकों को संबोधित कर मार्गदर्शित कर रहे थे कि भौतिक विज्ञान ने कितनी भी उन्नति कर ली हो, नई–नई शोध हमें बाहरी सुख प्रदान कर सकती है लेकिन आंतरिक रुप से सुखी होने व इस आत्मा को परमात्मा बनाने के लिए आज भी लाखों–करोड़ो वर्ष पहले तीर्थंकर ऋषभदेव से अंतिम तीर्थंकर महावीर द्वारा वर्णित भेद–विज्ञान की कला व आध्यात्मिक उन्नयन का सहयोगी वीतराग–विज्ञान ही है । आचार्यश्री ने बताया कि आज मिनरल वाटर की बात संपूर्ण विश्व में स्वीकार हो रही है । जैन दर्शन में ३६४५० जीव एक बूंद में होते है यह बात भगवान आदिनाथ के काल से ज्ञात है इसलिए जैन आचार पद्धति में पानी छानकर पीने का विधान है । रात्रि भोजन त्याग, अभक्ष्य पदार्थों का निषेध ऐसे अनेक उपाय है जो जैन दर्शन में वर्णित है । जिन पर आज खोज हो रही है व यह सत्य हो रहा है कि जैन आगम प्रमाणिकता के पुख्ता दस्तावेज है । वैज्ञानिकों के शोध आलेखों की सराहना करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि सभी आस्तिकता के साथ कार्य करें, दिनचर्या में मंदिर को सम्मिलित करें, प्रार्थना, ध्यान, पूजा–अर्चना के लिए समय निकालकर अपनी उन्नति पर ध्यान लगाए । आचार्यश्री ने कहा कि समस्त वैज्ञानिक निर्भीक होकर कार्य करें, उनके साथ सभी का सहयोग रहेगा ।

जैन इतिहास में पहली बार 'जैन लॉरिएट अवार्ड'

ज्ञानसागर साइंस फाउण्डेशन एवं श्रुत संवर्धन संस्थान द्वारा जैन इतिहास में पहली बार 'जैन लॉरियट अवार्ड' का प्रारंभ किया गया है । पहली बार उदयपुर निवासी वैज्ञानिक प्रो.पारसमल अग्रवाल को यह अवार्ड पार्लियामेन्ट्री एच.आर.डी. समिति के चेयरमेन श्री वीरेन्द्रसिंह चौधरी एवं श्रुत संवर्धन संस्थान के पदाधिकारियों, महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मल सेठी, प्रमुख समाजसेवी श्री सुरेन्द्र डी.हेगड़े (धर्मस्थल), साहू अखिलेश जैन (टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप), डॉ.डी.सी.जैन आदि ने प्रदान किया । उल्लेखनीय है कि डॉ. पारसमल अग्रवाल ने १६ वर्ष तक अमेरिका में भौतिक विज्ञान का अध्यापन कार्य कर कई पुरस्कार प्राप्त किए है । इस अवसर पर अमेरिका की क्लेरमोंट लिंकन यूनिवर्सिटी में जैन चेयर की प्रमुख डॉ.ब्राइन डोनाल्डसन, एना बेंजल, यूरोप के डॉ.अतुल शाह भी उपस्थित थे । भारत की प्रमुख शोध संस्थाएं इसरो के वैज्ञानिक डॉ.राजमल जैन, भाभा एटोमिक रिसर्च सेंटर (BARC), नेशनल फिजीकल लेबोरेटरी (NFL), व सीएसआईआर के वैज्ञानिकों ने भी अपने आलेख पढ़े । सम्मेलन का शुभारंभ सूर्यनगर महिला मण्डल व शीला जैन व इन्दू जैन के मंगलाचरण से हुआ । दीप प्रज्जवलन भारतीय ज्ञानपीठ के डायरेक्टर श्री साहू अखिलेश जैन, चित्र अनावरण श्री राकेश जैन (कृष्णा नगर), पाद प्रक्षालन श्री विपिन जैन (अहिंसा बिल्डर्स) ने किया । सम्मेलन संयोजक डॉ. संजीव सोगानी ने ज्ञानसागर साइंस फाउण्डेशन के कार्य व सम्मेलन की रुप रेखा प्रस्तुत की । द्वि–दिवसीय संगोष्ठी में डॉ.डी.सी.जैन, प्रो.एस.सी.जैन, डॉ.अतुल के शाह (लंदन), डॉ.ब्राइन डोनाल्डसन (अमेरिका), अमित डोशी, प्रो.विमल जैन, अना बेजल (अमेरिका), प्रो.डॉ.राजमल जैन (इसरो), डॉ.श्यामलाल गोदावत, प्रो.डॉ.एन.एल.कछारा, डॉ.सुचिता जैन, प्रो.प्रेम सुमन जैन, डॉ.जीवराज जैन, डॉ.जी.सी.जैन, डॉ.वर्षा शाह, डॉ.सुधीर बी.शाह, प्रो.अशोक जैन, डॉ.पी. एस.ठक्कर, डॉ.सुभाष जैन, डॉ.सुमनचंद जैन, डॉ.कोकिला एच.शाह, प्रो.विमल जैन, डॉ.सुरेन्द्र सिंह पोखरना, डॉ.रेणुका जैन, डॉ.महेन्द्रकुमार जैन, डॉ.नीलम जैन, डॉ.सुदर्शन जैन, पीयूष जैन, डॉ.एल.सी.जैन आदि ने अपने विशिष्ट शोध आलेख प्रस्तुत किए । समागत वैज्ञानिकों ने अपने प्रश्न भी पूछे ।

आचार्यश्री के व्यक्तित्व–कृतित्व का परिचय संघस्थ बा.ब्र.अनिता दीदी ने दिया । संचालन डॉ.नीलम जैन (पूना) व आभार संयोजक डॉ.संजीव सोगानी ने व्यक्त किया। दो दिन चले सम्मेलन में आठ सत्र हुए जिनमें ४० शोध आलेख प्रस्तुत हुए जिन्हें पुस्तकाकार प्रकाशित करने का निर्णय भी लिया गया । विशिष्ट रुप से श्री सुरेन्द्र डी.हेगड़े (धर्मस्थल) महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मल सेठी, तीर्थक्षेत्र कमेटी अध्यक्ष श्री सुधीर सिंघई (कटनी), महामंत्री श्री पंकज जैन (पारस चैनल), आई.ए.एस. श्री एम.पी.अजमेरा (रांची), श्री स्वराज जैन (टाइम्स ऑफ इंडिया), दिल्ली दि.जैन समाज के अध्यक्ष श्री चक्रेश जैन, अ.भा. शास्त्री परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ.श्रेयांस जैन (बडौत), डॉ.फूलचंद प्रेमी, डॉ. वृषभप्रसाद शास्त्री (दिल्ली) सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे । आचार्यश्री ज्ञानसागरजी की प्रेरणा से यह तीसरी अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेस थी । पूर्व में बैंगलोर, मुंबई में भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वैज्ञानिक सम्मेलन संपन्न हो चुके है ।

– राजेन्द्र जैन 'महावीर'

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

श्री संतोष कुमार टेकचन्द जैन
गाटेगाँव

श्री प्रेमचन्द ताराचन्द जैन
बेगमगंज

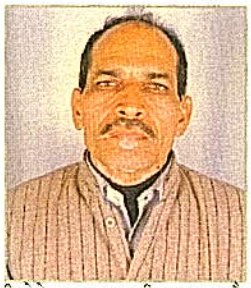
श्री देवेन्द्र कुमार सुनील कुमार जैन
बेगमगंज

श्री सुशीम कुमार सुपुत्र श्री जी.एल.जैन
बेगमगंज

श्री राजीव कुमार नंदनकुमार जैन
बेगमगंज

श्री विनय सागर बाहुबली जैन
खनियाधाना

श्री सरस आनंद कुमार जैन
बेगमगंज

श्री पुष्पेन्द्र कुमार राजाराम जैन
बेगमगंज

श्री विनोद कुमार बालचन्द जैन
बेगमगंज

श्रीमती मणि सुभाष जैन
भोपाल

श्री देवेन्द्र कुमार भागचन्द जैन
बेगमगंज

श्री अशोक कुमार जैन
बेगमगंज

श्री शरद कुमार सुरेशनन्द जैन (सोधिया)
महाराजपुर

श्री अजय कुमार शिव प्रसाद जैन
महाराजपुर

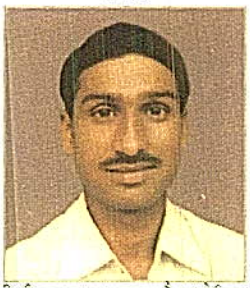
श्री नीरजकुमार धरमचन्द्र जैन (सोधिया)
महाराजपुर

श्री राजेश कुमार कोमलचन्द जैन (सोधिया)
महाराजपुर

श्री निलेश कुमार राजेन्द्र कुमार जैन (सोधिया)
महाराजपुर

श्री जवाहरलाल ताराचन्द जैन
महाराजपुर

श्री कमलेश कुमार कस्तूरचन्द जैन
महाराजपुर

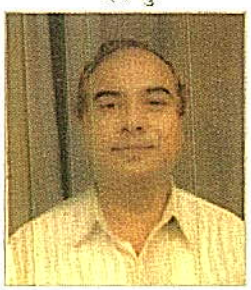
श्री राजीव कुमार भागचन्द जैन(सोधिया)
महाराजपुर

श्री विजय कुमार रमेशचन्द जैन
बेगमगंज

ी राजेश कुमार वृंदावनलाल जैन
बेगमगंज

श्री पंकज धनपाल सिंह जैन
नई दिल्ली

श्री रिषभ धनपाल सिंह जैन
नई दिल्ली

श्री रविन्दर धनपालसिंह जैन
नई दिल्ली

प्रत्येक जैन को अपने नाम के साथ 'जैन' अवश्य लिखना चाहिये

आजीवन सदस्य

श्री महेन्द्र कुमार कैलाशचन्द जैन
रांची

श्री जिगनेश जयंतीलाल शाह
सूरत

श्री सुमेरचन्द ताराचन्द जैन
दिल्ली

Shri S. Sudhakar Jain,
Somasipadi

Shri S. Bharatraj Appandaraj Jain
Tiruvannamalai

Shri Ajithan Mallinathan
Vengikkal

Shri S. B. Sudhamma,
Tirumalai

Shri S. V. Suresh Jain
George Town

Shri J. Jinendran Jaykumar
Vazhapandhal

Shri J. Jayabal Jayakumar
Gingee

Shri C. Ravi Chinraj Jain
Melapandal

Shri A. Indiran Audirajan
Valapandal

Shri Sripal Dhanpal Jain
Valapandal

Shri Ajith Ananthraj
Tirumalai

Shri Iyannan S/o Virushaba Doss
Tirumalai

Shri Nemirajan Dharmapalan Jain
Vala Pandal

Shri Jinadathan Appandai Nainar
Eyyil

Shri Thangaraj Jinendhiran
Valapandal

Shri Selvan Kamberam Jain
Valapandal

Shri Kuppusamy Sampathrao
Valapandal

Shri Kumar Chandranathan
Vazhai Pandhal

Shri Settu Ayyannan
Gingee

Shri Selvaraj Kuppusami Jain
Tiruvannamalai

Shri Ramesh V. Doss
Vengikkal

Shri Pavananthi Srinivasan Jain
Vengikkal

प्रभु दर्शन, फिर गुरु कृपा, एतदनुसार पुरुषार्थ, दुर्लभ जग में तीन ये मिले सार परमार्थ।

आजीवन सदस्य

Shri Parswanathan S/o Gunabathiran Jain
Somasipadi

Shri J. Mathialagan Jinadoss Jain
Vengikkal

Shri Mani Appusamy Jain
Tiruvanamalai

Shri Jina Doss S/o Kuppusamy
Tiruvannamalai

Shri Elangovan Appandaraj Jain
Tiruvannamalai

Shri Santhanakerthi Dhanadeva Nainar
Somasipadi

Shri Vijaybalan Chandranathan Jain
Somasipadi

Shri Jeenadavan Nalakutti
Somasipadi

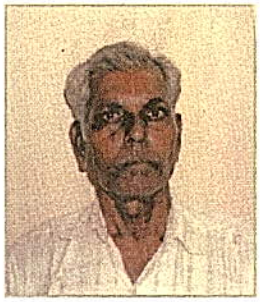
Shri Jinendiran Danadeva Jain
Somasipadi

Shri Nambirajan Amarashimman Jain,
Somasipadi

Shri Ramaswami Bannana Jain
Somasipadi

Shri Pushparaj Jaykumar Jain
Somasipadi

Shri Annanalai Appandai Jain
Somasipadi

Shri Mahaveer Thanyakumar Jain
Uppuvellore

Shri Sigamani Adhichakravarthy Jain
Tirumalai

Shri Dharanikumar Aadhinathan
Valapandal

Shri Sampath Ayyannam Jain
Valapandal

Shri Paradheswaran Jayachandran Jain
Melapandal

Shri Elangovan Jinendhiran Jain
Melapandal

Shri Vardhamanan Badmaraj Jain
Melapandal

Shri Baskaran Aadhiraj Jain
Melapandal

Shri Vijaya Kumar Appu Jain
Melapandal

Shri Pooranchandiran Samrajyan Jain
Somasipadi

Shri Gunasekaran Duraisamy Jain, Nallava
Palayan

Shri Raja Perumal Indira Kumar Jain
Nallavan Palayam

तीर्थों का संरक्षण, संवर्धन और सम्यक विकास हमारी प्रतिबद्धता है

आजीवन सदस्य

Shri Munusura Dhanpal Doss,
Nallavan Palayam

Shri Udaykumar Jeenadoss Jain
Nallavan Palayam

Shri Shantiraj Duraisamy Jain
Nallavan Palayam

Shri Shanthkumar Anthraj Jain
Nallavan Palayam

Shri Padmarajan Deokumaran Jain
Kilsathamangalam

Shri Muthu Swamy Jayakeerthi Jain,
Somasipadi

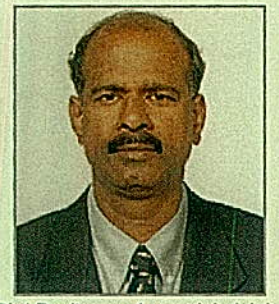
Shri Ravikumar Appandairaj Jain,
Thattan chavady

Shri Gurudevan Samy Kannu Jain
Somasipadi

Shri Ayyannan Parsuvanathan Jain
Nainarnandabam

Shri Gowthaman Chandranathan Jain
Somasipadi

Shri Vinothkumar Rajappam Jain
Tiruvannamalai

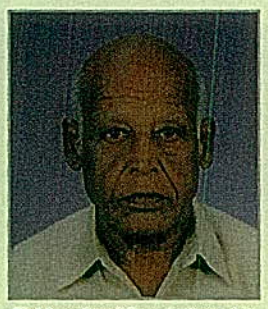
Shri Anantharaj Somabathran Jain
Mummumi

Shri Santharaj Bhopal Jain
Chennai

Shri Varthamaman Krishnaraj jain
Vandavasi

Shri Magash Chakkarathi Jain
Arumpakkam

Shri Suresh Chakarvarthy Jain
Arumbakkam

Shri Rajesh Chakarvarthy Jain
Arumbakkam

Shri Srithathan Sugumaran Jain
Uppuvellore

Shri Santhakumar Logabal Jain
Uppuvellore

Shri Sugumaran Appasamy Jain
Uppuvellore

Shri Appandraj Jayandrao Jain
Uppuvellore

Shri Pathirabagu Vijayakeerthi Jain
Pelakuppam

Shri Samuthra Vijayan Sakkarvarthy Jain
Pelakuppam

Shri Vijayabaskar Maninathan Jain
Nelliyan Kulam

Shri Rishabadevan Vijaykumar Jain
Vandavasi

Anger burns the nature of man just like fire burns things.

भगवान महावीर जन्मभूमि पर प्रथम बार

महामस्तकाभिषेक

उदय

9 से 13 अप्रैल, 2014
वासोकुण्ड, वैशाली,
जिला—मुजफ्फरपुर-844128 (बिहार)

मंगल आशीर्वाद | **मंगल नेतृत्व** | **मार्गदर्शक**

प.पू. विद्यानन्दजी | प.पू.विद्यासागरजी | प.पू.वर्धमानसागरजी | प.पू. श्रुतसागरजी | पू. साध्वीरत्न मंगलश्रीजी | डॉ. बीरेन्द्र डी. हेगड़े

वर्तमान शासननायक भगवान महावीर की जन्मभूमि का **उदय** परमपूज्य आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज की प्रेरणा एवं अन्य समस्त आचार्यों, मुनि भगवन्तों, गणमान्य राजनीतिज्ञों तथा सकल दिगम्बर जैन समाज की मंगल भावना से बिहार राज्य में एक तीर्थ क्षेत्र का **उदय** हो गया है।

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने 23 अप्रैल, 1956 को 'भगवान महावीर स्मारक' की आधारशिला रखी थी। पिछले 56 वर्षों से यह स्थान उपेक्षित पड़ा था, अब इस महान् तीर्थक्षेत्र का **उदय** हो गया है।

भगवान महावीर ने दीक्षोपवास के पश्चात् पहला आहार (पारणा) कूलग्राम (वर्तमान कोल्हुआ) में किया था। इसी स्थान पर एक सिंह का स्तंभ बना हुआ है, जो अशोक स्तंभ के नाम से प्रसिद्ध है। भगवान महावीर का पहचान चिह्न सिंह ही है और उनके पूर्वजों का यहाँ पहले से साम्राज्य था। इसलिए यह स्तंभ भगवान् महावीर की दीक्षा की स्मृति में वज्जियों और लिच्छिवियों द्वारा बनवाया गया था। यह हमारे जैन समाज की ऐतिहासिक धरोहर है जो 2000 वर्षों से उपेक्षित पड़ी थी और अब हम सबके भाग्य से इसका **उदय** हुआ है। भगवान महावीर स्वामी की इस जन्मभूमि पर सन् 1948 से आज तक प्रतिवर्ष महावीर जयन्ती के पावन पर्व पर बिहार सरकार द्वारा 'वैशाली उत्सव' का आयोजन होता आ रहा है और इसकी अध्यक्षता बिहार के महामहिम राज्यपाल महोदय करते हैं।

हमें ऐसा संकल्प लेना चाहिए कि जब तक मन्दिरजी में निर्माण कार्य पूर्ण ना हो जाए तब तक हम प्रति माह एवं प्रतिवर्ष अपने परिवार और अपनी समाज की ओर से धनराशि भगवान महावीर जन्मभूमि के विकास में अवश्य प्रदान करें, ऐसी परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज की मंगल भावना है, पूज्यश्री की इस भावना का हमें सम्मान करना चाहिए। नीचे दी गई भावी योजनाओं के संबंध में क्षेत्रीय अध्यक्षों से सम्पर्क करें-

(1) 5 ईंट 2500/- (2) एक गज़ जमीन 11000/- 3. मार्बल का प्रत्येक खम्बा 25000/- (4) प्रत्येक सीढ़ी की निर्माण राशि 51000/- 1,11,000/- की राशि देने वाले महानुभावों का नाम उचित स्थान पर शिलापट्ट पर अंकित किया जाएगा।

भावी योजनाएँ
1. मन्दिरजी में मार्बल का कार्य, 2. संत निवास, 3. साध्वी निवास, 4. संग्रहालय, 5. पुस्तकालय, 6. मुनि निवास, 7. ध्यान केन्द्र, 8. प्रवचन हॉल, 9. मानस्तम्भ, 10. भोजनशाला

हम सबके लिए परम सौभाग्य का अवसर है कि भगवान महावीर की जन्मभूमि पर प्रथम बार भगवान महावीर स्वामी जी का मस्तकाभिषेक होने जा रहा है, जो इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित होगा। इस महान् धार्मिक एवं ऐतिहासिक कार्य के लिए वैशाली में भगवान महावीर स्वामी जी का मस्तकाभिषेक करके अपने जीवन को सफल बनायें। इच्छुक महानुभाव जो किन्हीं कारणों से वैशाली पहुँचने में असमर्थ हों उन महानुभावों का कलश हम कराकर हमारे प्रतिनिधि द्वारा उनके घर पर भेजने की व्यवस्था करेंगे।

महामस्तकाभिषेक में कलश राशि (1) आचार्य विद्यानन्द कलश, (2) रत्न कलश 1,11,000/- (3) स्वर्ण कलश 51000/- (4) रजत कलश 25000/- (5) वैशाली कलश 11000/- (6) कांस्य कलश 5100/- (7) जनमंगल कलश 2100/-

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे.एन.यू. शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 में जमा कराई जा सकती है। राशि जमा कराने के पश्चात् कार्यालय में अवश्य सूचित करें।

भगवान महावीर स्मारक समिति दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067
सम्पर्क सूत्र— 09810081861, 09871139942, 09899614433, 09334128122 ई-मेल : scjain@scjgroup.net, वेबसाईट : www.lordmahavirbirthplace.com

निर्माण कमेटी—नरेश जैन (कामधेनु सरिया) दिल्ली

ASHIANA ISPAT LIMITED

ASHIANA GROUP A Symbol of Quality

(ISO 9001-2008 Certified Co.)
Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT
Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi, Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in
Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया | TMT Grade Fe 415,500,550

कर्म सिद्धांत देखने से नहीं, विश्वास से आता है।